ISSN 2582-712X

हिमांतर

हिमालयी सरोकारों के लिए समर्पित

वर्ष : 1 अंक : 2 जनवरी-मार्च, 2021 (त्रैमासिक)

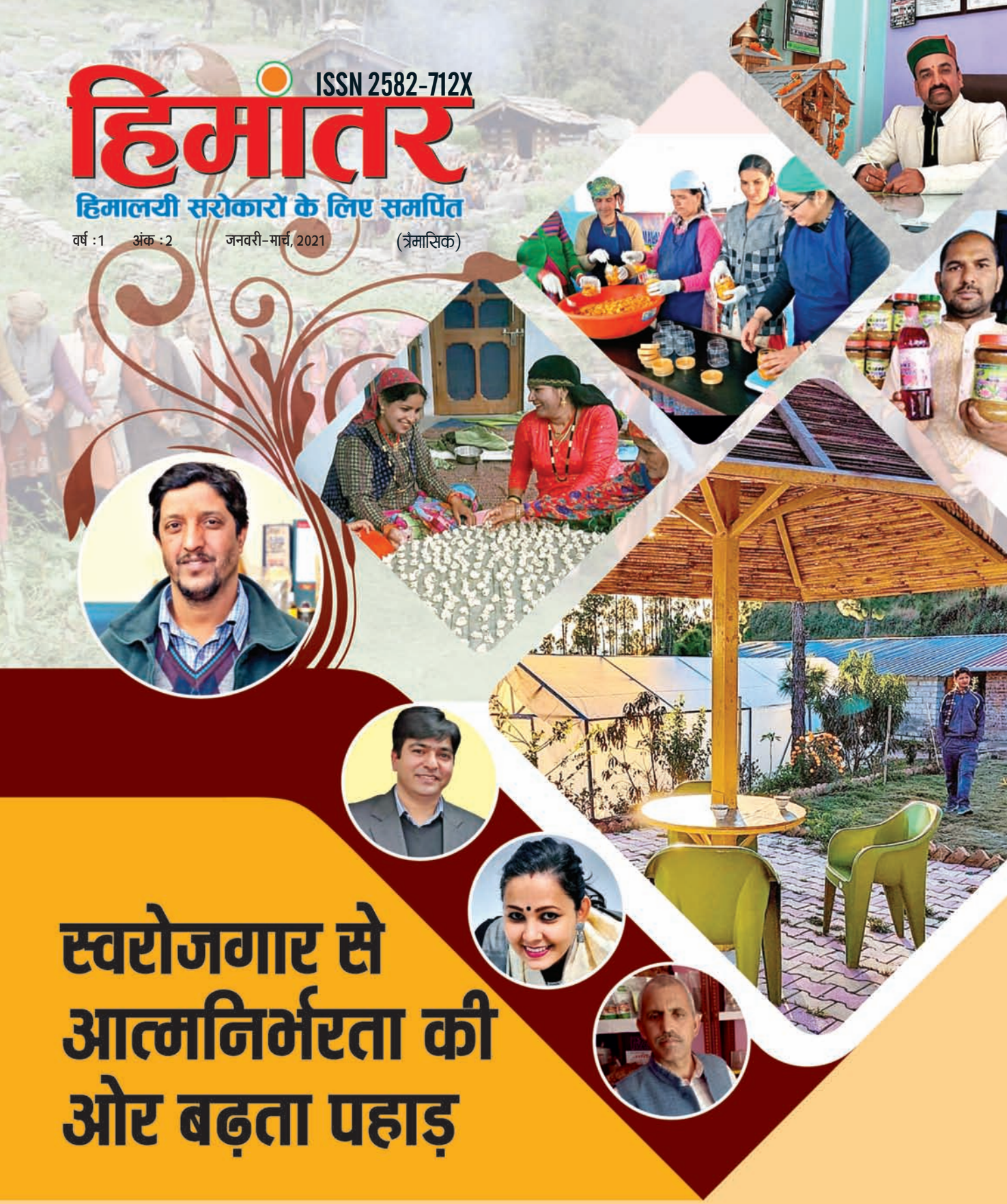

स्वरोजगार से आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ता पहाड़

गाँव-गोठ्यार | खेती-बाड़ी | पर्यटन | संस्कृति | पर्यावरण | संस्मरण | यात्राएं | आधी आबादी | कविताएं | कहानियां

(त्रैमासिक) ई-पत्रिका

हिमांतर

हिमालयी सरोकारों के लिए समर्पित

पहला अंक पढ़ने के लिए QR Code Scan करें-

पढ़ने के लिए Visit करें-

www.himantar.com

(त्रैमासिक) ई-पत्रिका
हिमांतर
हिमालयी सरोकारों के लिए समर्पित
ISSN 2582-712X
वर्ष : 1 अंक : 2 जनवरी–मार्च, 2021 (संयुक्तांक)

संपादक : डॉ. मनमोहन सिंह रावत
कार्यकारी संपादक : डॉ. प्रकाश उप्रेती
सहायक संपादक : मंजू काला
संपादन सहयोग : ललित फुलारा
: डॉ. भावना मासीवाल
: अंकिता रासुरी
: वाईएस बिष्ट
प्रबंध निदेशक : सीमा रावत

संपादकीय सलाहकार
आचार्य सुरेश उनियाल
जे.पी. मैठाणी
महाबीर रवांल्टा
डॉ. विजया सती
डॉ. कुसुम जोशी
डॉ. गिरिजा किशोर पाठक
डॉ. रेखा उप्रेती
हिमांशु डबराल
अरविन्द मालगुड़ी
डॉ. हरेन्द्र सिंह
पंकज ध्यानी
अर्जुन सिंह रावत
नीलम पांडेय 'नील'
सुनीता भट्ट पैन्यूली
दिनेश रावत
ध्यान सिंह रावत 'ध्यानी'

वेब डिजाइनर : महेन्द्र नेगी

मार्केटिंग प्रबंधक
सुनील लोहानी
नरेश नौटियाल

कार्यालय
एफ–107, एस एस्पायर, नोएडा
एक्सटेंशन, उत्तर प्रदेश

देहरादून कार्यालय
फेस–3, यमुनोत्री एनक्लेव, सेंवलाकला,
देहरादून (उत्तराखंड)

himantar9@gmail.com
www.himantar.com
Himantar
Himantar9
@Himantar1
+91-8860999449

उपरोक्त सभी पद अवैतनिक हैं. हिमांतर में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखक के अपने हैं, इससे संपादक एवं संपादक मंडल की सहमति/असहमति अनिवार्य नहीं है. रचना की मौलिकता संबंधी किसी भी प्रकार के विवाद एवं चुनौती हेतु लेखक स्वयं उत्तरदायी होगा. रचना चयन का अंतिम अधिकार संपादक एवं संपादन समिति के पास सुरक्षित है. हिमांतर से संबंधित किसी भी प्रकार के विवाद का न्यायिक स्थल देहरादून होगा.

■ संपादकीय 5
- उखेल-पाखेल

- अन्वेषक अमर के 'अमर' उद्यमीय प्रयास — डॉ. अरुण कुकसाल 6-9
- स्वरोजगार से आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ेगा पहाड़ — अजेय कुमार 10-11
- प्रकृति और जैविक उत्पादों से दिखाई स्वरोजगार की राह — अनिता मैठाणी 12-14
- स्वरोजगार की पहल से प्रेरित करने वाले मनीष — आरूशी 16-17
- पर्वतारोहण और ट्रैकिंग से स्वरोजगार की पहल — शशि मोहन रवांल्टा 18-19
- बुरांश को बनाया रोजगार का जरिया — प्रेम पंचोली 20-21
- एक किचन से आया स्वरोजगार का विजन — सीमा रावत 22-23
- 150 से ज्यादा उत्पादों को मिला बाजार — भारती आनंद 24-25
- नौकरी छोड़ ऐपण को बनाया स्वरोजगार का जरिया — अंजली फुलारा 26-27
- नौकरी छोड़ होमस्टे चला रहा इंजीनियर — प्रियंका 28-29
- पहले खुद बनाये गोबर से दीये अब महिलाओं को रही हैं सीखा 30
- डेकोरेटिव प्रोडक्ट्स बनाकर घर ही नहीं, गांव भी संवारा 31

■ मेरे हिस्से और किस्से का पहाड़ 32-33
- पांच महिलाओं ने रखी समूह की नींव — डॉ. प्रकाश उप्रेती

■ राहों के अन्वेषी 34-35
- संघर्ष और मेहनत की बदौलत सफल उद्यमी बना पहाड़ का बेटा — शशि मोहन रवांल्टा

■ नजरिया 36-38
- खतरे में है मिठास — मंजू काला

- सक्रिय राजनीतिक प्रतिरोध के चिंतक : रामविलास शर्मा — डॉ. स्मिता मिश्र 40-44

#VocalforLocal

उत्तराखण्ड पहाड़ी रसोई

उत्तराखण्ड के पहाड़ी व्यंजनों की अनेकों पारंपरिक विधियों को जानने, प्राचीन संस्कृति के संरक्षण तथा हमारी परंपरागत भोजन विधियां लुप्त न हों, अपनी पहाड़ी सांस्कृतिक विरासत विश्व स्तर पर प्रचारित हो और इम्युनिटी बूस्ट करने वाली इन सभी रेसिपीज को जन-जन तक पहुंचाने जैसे महान उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए #UttarakhandPahadiRasoibyNimmiKukreti चैनल को जरूर सब्सक्राइब करें.

यह रसोई पहाड़ी भोजन व पकवानों को शेयर करके इन व्यंजनों का शौकीन बनाने हेतु एक प्रयास है. सभी उत्तराखण्डी और भारतीयों की यह अपनी रसोई है. यह हम जैसे मध्यम या निम्न आय वर्ग के लोग कम से कम सामग्री का उपयोग करके भारतीय विशेषकर उत्तराखण्ड के पारम्परिक पौष्टिक पकवानों का आनन्द ले सकेंगे. यह आपकी अपनी रसोई है. रेसिपीज के वीडियोज पूरा जरूर देखिये, खुद भी बनाइये, खाइये और खिलाइए और जन-जन तक इन रेसिपीज जरूर पहुंचाइये.

चैनल सब्सक्राइब वीडियोज को लाइक एंड शेयर करें

https://www.youtube.com/channel/UCipl1na7QJ55X9AjgKuCT9w/featured

अनमोल सृष्टि प्रोडक्शन

Production

- मूवी एंड डॉक्यूमेंट्री मेकिंग
- पहाड़ी एलबम व एड मेकिंग
- शॉर्ट फिल्म एंड वेब सीरीज मेकिंग
- सॉन्ग रिकॉर्डिंग एंड फोटोशूट
- थिएटर वर्कशॉप एंड प्ले डायरेक्शन
- इवेंट एंड कास्टिंग

संपर्क करें
9971432494

प्रीति ध्यानी
सीईओ
अनमोल सृष्टि प्रोडक्शन

Gate No 3 House No D 1075 D-Block LIG Pkt 3 DDA Flats Bindapur

उखेल-पाखेल

कोविड-19 ने पूरी दुनिया को कई संदर्भों के साथ सोचने के लिए मजबूर किया. अचानक इस महामारी ने पूरी दुनिया को अपनी चपेट में लिया और रफ़्तार भरी जिन्दगी पर ब्रेक लगा दिया. जीवन के हर हिस्से पर इस महामारी का गहरा प्रभाव पड़ा. नजदीकियां, दूरियों में बदल गई और जीवन क्षणभंगुर लगने लगा. मनुष्य और मशीन की ताकत इस महामारी के आगे बौनी ही साबित हुई. ऐसे में जीवन के साथ-साथ इस महामारी ने उन स्थापित ढांचों में भी परिवर्तन किया जिनके जरिए भौतिक जीवन संचालित होता है. पूरी दुनिया में इस महामारी ने करोड़ों लोगों का रोजगार छीन लिया और एक त्रासदी को जन्म दिया. अब इस महामारी को एक वर्ष से ज्यादा समय हो गया है. पूरी दुनिया इसकी वैक्सीन के परीक्षण के दौर से गुजर रही है. लोगों में एक उम्मीद इस नाउम्मीदी के दौर में जागी है लेकिन अभी भी जीवन को पटरी में आने में काफी समय लगेगा. इस एक वर्ष के अलगाव ने दुनिया को कई स्तरों पर सोचने को मजबूर किया. रोजगार सृजन से लेकर शिक्षण तक में कई सारे प्रयोग किए गए. इन प्रयोगों के कारण ही इस महामारी के बीच भी एक दुनिया समानांतर चलती रही.

रोजगार छिन जाने के बाद कई लोग अपने मूल स्थान की तरफ लौटे और रोजगार के लिए स्थानीय संसाधनों के उपयोग से स्वरोजगार का सृजन किया. ऐसी स्थिति में पहाड़ के लोग जो अमूमन रोजगार की तलाश में शहरों की तरफ गए वह भी वापस गाँव लौट आए. पहाड़ के लिए तो यह बात कही ही जाती है- 'पहाड़ का पानी और जवानी कभी पहाड़ के काम नहीं आती है' लेकिन इधर कुछ जुझारू लोगों ने इस बात को गलत साबित किया है. इन लोगों ने पहाड़ में रहकर ही पहाड़ को बचाए, जिलाए और सींचने का कार्य किया है. इनकी जवानी पहाड़ के काम आ रही है और वह उस पानी का उपयोग भी कर रहे हैं जो वर्षों से शहरों की तरफ बहता रहा है. पहाड़ में कई लोगों ने सीमित संसाधनों के साथ स्वरोजगार को साकार कर दिखाया. इन युवाओं ने पहाड़ के उत्पादों को वो 'वैल्यू' भी प्रदान की जो पहले नहीं थी. जैसे एक युवा इस महामारी में रोजगार खोने के बाद 'सिसोंड़' से हर्बल टी तैयार कर उसे बाजार में ले आता है. पहाड़ में अब तक 'सिसोंड़' की कोई वैल्यू नहीं थी. यह अपने आप उगती और नष्ट होती रहती थी लेकिन आज इसके जरिए बनने वाली हर्बल टी की बाजार में बड़ी मांग है. वह जो कल तक शहर में नौकरी कर रहा था उसने इसके जरिए पहाड़ में कई लोगों को रोजगार भी देना आरंभ कर दिया है. पहाड़ की ऐसी ही कई और कहानियां हैं जिन्होंने स्वरोजगार के जरिए पहाड़ को फिर से बनाए और बचाए रखने का कार्य किया है.

हिमांतर का यह अंक ऐसी ही कहानियों पर केन्द्रित है. हमने कोशिश की है कि हर क्षेत्र में स्वरोजगार सृजित करने वाले लोगों की कहानियां पाठकों तक पहुंचाएं ताकि और लोगों को प्रेरणा मिल सके. ये कहानियां मात्र कहानियाँ नहीं बल्कि वो उम्मीद की किरण हैं जो पलायन जैसी समस्या को रोकने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं. वे लोग जो मजबूरन गाँव छोड़कर बाहर बसे हैं उन्हें ये कहानियां हिम्मत देंगी कि पहाड़ में रहकर भी जीवनयापन हो सकता है. स्वरोजगार की इस मुहिम में स्वयं सहायता समूह की महिलाओं का भी बड़ा योगदान है. पहाड़, यहाँ की महिलाओं से ही आबाद है और अब वह पहाड़ को एक नया आयाम प्रदान कर रही हैं. जैसे गोबर से दीये बनाकर कुछ महिलाओं ने वह कर दिखाया जिसके बारे में कोई सोच भी नहीं सकता था. अब ये महिलाएं आर्थिक मोर्चे पर भी कई लोगों को रोशनी दिखा रही हैं. इस अंक में ऐसे कई साक्षात्कार और लेख हैं जो पहाड़ की जीवटता, संघर्ष और रोशनी की नई किरण को अभिव्यक्त करते हैं. इस जीवटता और संघर्ष में पहाड़ की महिलाएं अग्रणी हैं.

अब यह अंक आपके हाथों और स्क्रीन पर है. मुझे आशा है कि आप इस अंक को पढकर खुले मन से आलोचना करेंगे ताकि हम और बेहतर कर सकें.

Prakash

— प्रकाश उप्रेती

19वीं सदी में पहाड़ में स्वरोजगार की नींव रखने वाला उद्यमी

डॉ. अरुण कुकसाल
लेखक एवं प्रशिक्षक

सीरौं गांव (पौड़ी गढ़वाल) के महान अन्वेषक और उद्यमी अमर सिंह रावत सन् 1927 से 1942 तक कंडाली, पिरूल और रामबांस के कच्चेमाल से व्यावसायिक स्तर पर सूती और ऊनी कपड़ा बनाया करते थे. उन्होने सन् 1940 में मुम्बई (तब का बम्बई) में प्राकृतिक रेशों से कपड़ा बनाने के कारोबार में काम करने का 1 लाख रुपये का ऑफर ठुकरा कर अपने गढ़वाल में ही स्वरोजगार की अलख जगाना बेहतर समझा.

सीरौं गांव (पौड़ी गढ़वाल) के महान अन्वेषक और उद्यमी अमर सिंह रावत सन् 1927 से 1942 तक कंडाली, पिरूल और रामबांस के कच्चेमाल से व्यावसायिक स्तर पर सूती और ऊनी कपड़ा बनाया करते थे. उन्होंने सन् 1940 में मुम्बई (तब का बम्बई) में प्राकृतिक रेशों से कपड़ा बनाने के कारोबार में काम करने का 1 लाख रुपये का ऑफर ठुकरा कर अपने गढ़वाल में ही स्वरोजगार की अलख जगाना बेहतर समझा. परन्तु हमारे गढ़वाली समाज ने उनकी कदर न जानी. आखिर में उनके सपने और आविष्कार उनके साथ ही विदा हो गये.

पौड़ी (गढ़वाल) के असवालस्यूं पट्टी का सिरमौर गांव है 'सीरौं'. आबादी, खेती, पशुधन और जीवटता में जीवंत. राजनेता तीरथ सिंह रावत इसी गांव के हैं. बात अतीत की करें तो उत्तराखंड में सामाजिक चेतना की अलख जगाने वालों में 3 अग्रणी व्यक्तित्व इसी गांव से ताल्लुक रखते थे. अन्वेषक एवं उद्यमी अमर सिंह रावत, आर्य समाज आंदोलन के प्रचारक जोध सिंह रावत और शिक्षाविद् डॉ. सौभाग्यवती. यह भी महत्वपूर्ण है कि गढ़वाल राइफल के संस्थापक लाट सुबेदार बलभद्र सिंह नेगी के पूर्वज भी इसी गांव से थे.

अमर सिंह रावत का जन्म 13 जनवरी, 1892 को सीरौं गांव में हुआ था. उन्होंने कंडारपाणी, नैथाना एवं कांसखेत से

प्रारम्भिक पढ़ाई की. मिडिल (कक्षा-7) के बाद स्कूली शिक्षा से उनका नाता टूट गया. परन्तु जीवन की व्यवहारिकता से जो सीखने-सिखाने का सिलसिला शुरू हुआ वह जीवन पर्यन्त चलता रहा. उनका पूरा जीवन यायावरी में रहा. उन्होंने जीवकोपार्जन के लिए सर्वप्रथम सर्वे ऑफ इंडिया, देहरादून में नौकरी की थी. नौकरी रास नहीं आयी तो रुड़की में टेलरिंग का काम सीखा और दर्जी की दुकान चलाने लगे. विचार बदला तो नाहन (हिमाचल प्रदेश) में अध्यापक हो गए. वहां मन नहीं लगा तो दुगड्डा (कोटद्वार) में अध्यापकी करने लग गए. वहां से लम्बी छलांग लगा कर लाहौर पहुंचकर आर्य समाज के प्रचारक हो गए. फिर कुछ महीनों बाद गढ़वाल आ गए और आर्य समाज के प्रचारक बन गांव-गांव घूमने लगे. इस बीच डीएवी स्कूल, दुगड्डा में उन्होंने प्रबंधकी भी की.

संयोग से जोध सिंह नेगी (सूला गांव) जो कि उस समय टिहरी रियासत में भू बंदोबस्त अधिकारी के महत्वपूर्ण पद पर कार्यरत थे से उनका परिचय हुआ. जोध सिंह नेगी उनको अपने साथ टिहरी ले गये. अब अमर सिंह टिहरी रियासत के बंदोबस्त विभाग में काम करने लगे. जोध सिंह नेगी ने भू बंदोबस्त अधिकारी का पद छोड़ा तो उन्हीं के साथ वापस पौड़ी आ गए. जोध सिंह नेगी ने 'गढ़वाल क्षत्रीय समिति' के तहत 15 जनवरी, 1922 से 'क्षत्रीय वीर' समाचार पत्र का पौड़ी से प्रकाशन आरम्भ किया. अमर सिंह उसमें मुख्य सहायक के रूप में कार्य करने लगे.

मन-मयूर फिर नाचा और अमर सिंह करांची चल दिए और आर्य समाज के प्रचारक बन वहीं घूमने लगे. इस दौरान कोइटा (बलूचिस्तान) में भी प्रचारिकी की. लगभग 20 साल की घुम्मकड़ी के बाद 'जैसे उड़ि जहाज को पंछी, फिर जहाज पर आयो' कहावत को चरितार्थ करते हुए सन् 1927 में अपने गांव सीरौं वापस आ गए.

अब शुरू होता है उनका असली काम. सीरौं आकर अमर सिंह रावत ग्रामीण जनजीवन की दिनचर्या को आसान बनाने और उपलब्ध प्राकृतिक संसाधनों के बेहतर उपयोग के लिए नवीन प्रयोगों में जुट गए. विशेषकर स्वरोजगार के लिए उनके अभिनव प्रयोग ग्रामीण समाज में लोकप्रिय होने लगे. उन्होंने अपने घर का नाम 'स्वावलम्बी शिक्षा सदन' रखा और घर के मुख्य द्वार पर 'स्वदेशी में ही स्वराज्य है' आदर्श वाक्य अंकित किया था. यह प्रेरणादाई वाक्य आज भी उनके भवन में अपनी गौरवमयी मौजूदी के साथ दिखाई देता है. उन्होंने सीरौं के नजदीकी गांवों यथा- नाव, चामी, ऊंणियूं, देदार, कंडार, रुउली, खुगशा, किनगोड़ी, सुरालगांव, जैथोलगांव, पीपला, सरासू, डुंक आदि के युवाओं के साथ मिलकर स्थानीय खेती, वन, खनिज एवं जल सम्पदा के बारे में लोकज्ञान, तकनीकी और उपलब्ध साहित्य का अध्ययन किया. साथ ही ग्रामीणों के साथ मिल कर इन संसाधनों के बेहतर उपयोग के लिए नवीन एवं सरल तकनीकी को ईजाद किया. अमर सिंह रावत ने नवीन खोज, प्रयोग एवं तकनीकी से सुविधायुक्त और अधिक मात्रा में सूत कातने का चरखा, अनाज पीसने एवं कूटने की चक्की, पवन चक्की, साबुन, वार्निश, इत्र, सूती एवं ऊनी कपड़े, रंग, कागज, ब्लौटिंग पेपर, सीमेंट आदि उत्पादों का निर्माण किया और लोगों को इन

स्वावलम्बी सदन, सीरौं.

उत्पादों को बनाना और इस्तेमाल करना सिखाया.

उल्लेखनीय है कि अमर सिंह रावत उस काल में अपने गांव सीरौं में रहते हुए व्यावसायिक तौर पर 42 प्रकार के उत्पादों का निर्माण, उत्पादन और विक्रय किया करते थे.

अमर सिंह रावत ने अपने आविष्कारों में इस विचार को प्रमुखता दी कि ग्रामीण जनजीवन के कार्य करने के तौर-तरीकों में सुधार लाया जाय तो इससे आम आदमी के समय, मेहनत और धन को बचाया जा सकता है. महिलाओं के कार्य कष्टों को कम करने के दृष्टिगत उन्होंने दो तरफ अनाज कूटने की गंजेली बनाई. यह गंजेली एक पांव से दबाने पर बारी-बारी दोनों ओर से ओखली में भरे अनाज को आसानी से कूटती थी. सन् 1930 में अनाज पीसने के लिए सीरौं गांव की धार में 'पवन चक्की' को स्थापित किया था. इस पवन चक्की को उन्होंने पहले 'अमर चक्की' फिर बाद में उसमें आवश्यक सुधार करके सन् 1934 में तत्कालीन गढ़वाल जिला बोर्ड की शिक्षा समिति के अध्यक्ष जगमोहन सिंह नेगी से प्रभावित होकर 'जगमोहन चक्की' नाम दिया. अनाज पीसने के लिए उनकी बनाई इस 'पवन चक्की' का उपयोग असवालस्यूं इलाके के कई गांवों के ग्रामीणों ने वर्षों तक किया था.

उन्होंने सुरई के पौधे से वार्निश, विभिन्न झाड़ियों से प्राकृतिक रंग, खुशबूदार पौधों से इत्र एवं साबुन, मंडुवा, धान, मक्का, झंगौरा के डंठलों और घासों के पल्प और प्राकृतिक रेशों की कताई-बुनाई के बाद उसके अवशेषों से कागज एवं ब्लोटिंग पेपर बनाया. उन्होंने मुलायम पत्थरों से सीमेंट बना कर कई घरों का निर्माण किया जिनकी मजबूती बरकरार है. आज भी सीरौं गांव में उनके पैतृक भवन पर

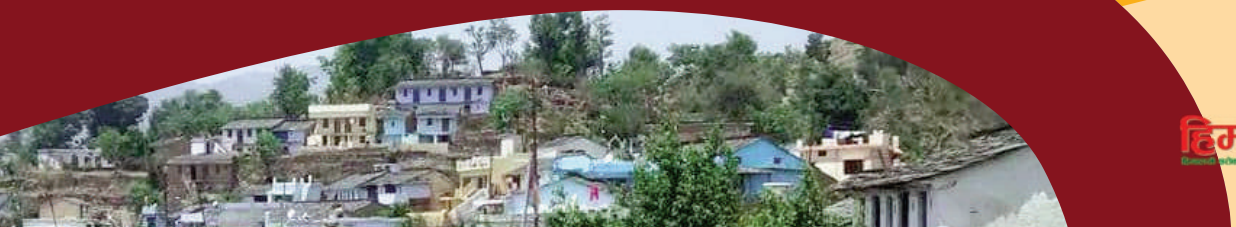

रामबांस के कपड़े से बनी कापी की जिल्द.

स्थानीय पत्थरों से तैयार सीमेंट उनके अदभुत प्रयासों की याद दिलाता है.

अमर सिंह ने भीमल, भांग, कंडाली, सेमल, खगशा, मालू तथा चीड़ आदि की पत्तियों से ऊनी कपड़े तैयार किये. चीड़ के पिरूल से ऊनी और सूती बास्कट (जैकेट) बनायी जिसे वे और उनके साथी पहनते थे. पिरूल से बनी जैकेट को उन्होंने जवाहर लाल नेहरू को भेंट की थी. इस जैकेट को उन्होंने 'जवाहर बास्कट' नाम दिया था. नेहरू ने उनके काम को सराहा और इस काम को आगे बढ़ाने के लिए मदद का आश्वासन दिया था. परन्तु नेहरू की बातें कोरी ही सिद्ध हुईं, उनकी तरफ से पत्राचार के अलावा कुछ नहीं हुआ.

चीड़ के पिरूल से बना कपड़ा और उससे बनी जैकेट.

सन् 1940 में नैनीताल में आयोजित 'कुमाऊं कला कौशल प्रर्दशनी' में अमर सिंह रावत ने अपनी टीम एवं उत्पादों के साथ भाग लिया. इस प्रर्दशनी में मुम्बई से प्रसिद्ध उद्योगपति सर चीनू भाई माधोलाल बैरोनेट भी आये थे. अमर सिंह रावत के स्थानीय वनस्पतियों यथा- कंडाली, पिरूल, रामबांस से ऊनी और सूती कपड़ों के उत्पाद जैसे बास्कट, कमीज, टोपी, मफलर, कुर्ता, दस्ताने, मोजे, जूते आदि बनाने के फामूर्ले और कार्ययोजना को उद्योगपति सर चीनू भाई ने 1 लाख रुपये में खरीदना चाहा और अमर सिंह रावत को मुम्बई आकर उनके साथ साझेदारी में उद्यम लगाने की पेशकश की थी. अमर सिंह ने उद्यमी चीनू भाई को दो टूक जबाब दिया कि ''यदि यह उद्योग वो गढ़वाल में लगायें तो वे उनके साथ काम करने को तैयार हैं.'' अमर सिंह रावत की मंशा यह थी कि इससे गढ़वाल के लोगों को रोजगार मिलेगा. उद्योगपति चीनू भाई मुम्बई में ही उद्यम लगाना चाहते थे. अतः बात नहीं बन पाई. उसके बाद अमर सिंह रावत ने स्वयं ही अपने गांव के आस-पास उद्यम लगाने के प्रयासों में लग गए.

'मेरे बड़े भाई जी' लेख में जोध सिंह रावत ने इस प्रसंग को इस प्रकार लिखा है कि ''चीड़ ऊन की चीजों को देखकर नैनीताल की कुमांऊ प्रदर्शनी के अवसर पर बम्बई के प्रसिद्ध उद्योगपति सर चीनू भाई माधोलाल बैरोनेट उन पर मोहित हो गये थे और उस सारी योजना और फारमूला को खरीदने के लिए तैयार हो गए थे, लेकिन उन्हीं दिनों बड़ी लड़ाई छिड़ गई. फिर भी वे एक लाख रुपये देने को तैयार हो गये थे. पर एक जटिल सवाल पर वह बात अटक गई. जब भाईजी ने पूछा कि- 'यह स्कीम कहां चलाई जायेगी?' तब चीनू भाई ने उत्तर दिया कि 'बम्बई में चलेगी और मेरे नाम से चलेगी.' भाईजी ने कहा कि 'इस स्कीम में मेरा और गढ़वाल का नाम भी होना चाहिए, मैं रुपयों के लालच में गढ़वाल का नाम नहीं बेच सकता हूं, रुपये तो अधिक समय तक मेरे पास रहेंगे नहीं, और यह बात हमेषा मेरे दिल में चुभती रहेगी.'...इस प्रकार से वह बना-बनाया काम बिगड़ गया था.''

उल्लेखनीय है कि अप्रैल, 1942 में तत्कालीन जिला पंचायत, पौड़ी ने उनके कंडाली, रामबांस, पिरूल, भांग, भीमल आदि से कपड़ा बनाने की कार्ययोजना के लिए 8 हजार रुपये का अनुदान मंजूर किया था. यह तय हुआ कि पौड़ी (गढ़वाल) की बाली-कंडारस्यूं पट्टी के चैलूसैंण/चिपलघाट में अमर सिंह रावत के सभी प्रयोगों को व्यावसायिक रूप देने के लिए यह उद्यम लगाया जायेगा. पर वाह! रे हम गढ़वालियों की बदकिस्मती. दिन-रात की भागदौड़ की वजह से अमर सिंह रावत की तबियत बिगड़ गई. कई दिनों तक बीमार रहने पर सतपुली के निकट बांघाट अस्पताल में 30 जुलाई, 1942 को अमर सिंह रावत का निधन हो गया. सारी योजनायें धरी की धरी रह गयी. उनके सपने उन्हीं के साथ सदा के लिए चुप हो गये.

अमर सिंह रावत की मृत्यु के बाद उनके परम मित्र और गढ़वाल के प्रथम लोकसभा सदस्य भक्तदर्शन ने सन् 1952 में अमर सिंह रावत के आविष्कारों की कार्ययोजना बनाकर प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू के सामने प्रस्तुत की थी. नेहरू ने सकारात्मक टिप्पणी

के साथ संबधित अधिकारियों को फाइल भेजी. इस पर सरकार की ओर से कुछ सकारात्मक प्रयास भी हुये. पर बात आगे नहीं बढ़ पायी. अमर सिंह रावत के छोटे भाई जोध सिंह रावत ने उनके प्रयासों को आगे बढ़ाने का प्रयास किया. 'मेरे बड़े भाई जी' लेख में जोध सिंह रावत ने अमर सिंह रावत की स्मृति में कण्वाश्रम (कोटद्वार) के गुरुकुल महाविद्यालय और अपने पैतृक गांव सीरौं के निकट रमाड़डांग कालेज में भवन निर्माण में आर्थिक सहयोग का उल्लेख किया है.

अमर सिंह रावत ने सन् 1927 से 1942 तक लगातार स्थानीय संसाधनों के बेहतर इस्तेमाल के लिए नवीन तकनीकी एवं उत्पादों का विकास किया. उनका घर नवाचारों की प्रयोगशाला थी. अपने आविष्कारों की ब्यवहारिक सफलता के लिए उन्होंने धर की जमा पूंजी तक खर्च कर दी थी. वे उस समय के लोकप्रिय साप्ताहिक समाचार पत्र 'कर्मभूमि' में अपने शोधपूर्ण प्रयासों के बारे में नियमित आलेख लिखा करते थे. उन्होंने अपने आविष्कारों को व्यवाहारिक रूप देने के साथ उन्हें लिपिबद्ध भी किया था. विभिन्न उत्पादों की निर्माण तकनीकी एवं फामूर्लों को उल्लेखित करते हुए सन् 1940 में 'पर्वतीय प्रदेशों में औद्योगिक क्रांति' पुस्तक को तैयार किया. परन्तु आर्थिक अभावों के कारण वे इस पुस्तक को प्रकाशित नहीं करा पाये थे. बाद में भक्तदर्शन ने इस किताब को सन् 1983 में प्रकाशित किया था.

इस पुस्तक में अमर सिंह रावत की खोजों को व्यवाहारिक रूप देने के लिए भक्त दर्शन द्वारा किये गये प्रयासों के तहत तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू और अन्य अधिकारियों से हुए पत्राचारों को भी हूबहू शामिल किया गया है. 'मेरे बड़े भाई जी' लेख में जोध सिंह रावत ने अमर सिंह रावत के व्यक्तित्व और कृतित्व के साथ तत्कालीन हालातों का जिक्र किया है. इसी किताब में अमर सिंह रावत के साप्ताहिक 'कर्मभूमि' (लैंसडौन) के 1 अप्रैल, 1940 के 'नव-वर्षांक' में प्रकाशित लेख 'मेरी खोज और अनुभव' का भी उल्लेख है. इस लेख में अमर सिंह रावत ने अपनी मार्मिक व्यथा को व्यक्त करते हुए लिखा है कि ''मैं जिन अवसरों को ढूंढ़ रहा था, वे भगवान ने मुझे प्रदान किये. परन्तु मैं उनका कैसे उपयोग करूं यह समस्या मेरे सामने है. मेरी खोजों का व्यवहारिक रूप देने के लिए यथोचित संसाधन नहीं हैं. अब तक इस पागलपन में मैं अपनी संपूर्ण आर्थिक शक्ति को खत्म कर चुका हूं. यहां तक कि स्त्री-बच्चों के लिए भी कुछ नहीं रखा है. अब केवल मेरा अपना शरीर बाकी है. यदि गढ़वाल के लोग मुझसे कुछ सेवा चाहते हैं, मेरे जीवन से लाभ उठाना चाहते हैं, तो आगे आवें, चीड़-ऊन तथा अन्य वस्तुओं के लिये मेरी योजनायें तैयार हैं, पर आवश्यकता है साहस के साथ आगे बढ़ने वालों की!''

'पर्वतीय प्रदेशों में औद्योगिक क्रांति' के संपादकीय वक्तव्य में भक्त दर्शन ने लिखा है कि ''इस पुस्तक को पढ़ने से पाठकों को ज्ञात हो जायेगा कि स्वर्गीय रावत जी कितने विलक्षण एवं मेघावी अन्वेषक थे. अपने दीर्घकालीन प्रयत्नों में उन्होंने अपना सब कुछ निछावर कर दिया था. पिता की सम्पत्ति, अपनी कमाई और सहयोगियों की सहायता... सीरौं गांव में उनका मकान वर्कशाप, स्टूडियो और लेबोरेटरी का एक अद्‌भुत सम्मिश्रण बन गया था. अपने उस मकान पर उन्होंने 'स्वावलम्बी शिक्षा सदन' और 'स्वदेशी में ही स्वराज्य है' सरीखे आदर्श वाक्य अंकित किये हुए थे. पर उन आविष्कारों की धुन में उनकी आर्थिक स्थिति चिन्तापूर्ण हो गई थी और उन्हें यह चिन्ता सताती रहती थी कि वे सम्भवतया अपनी पुस्तक को भी छपा नहीं सकेंगे.''

'पर्वतीय प्रदेशों औद्योगिक क्रांति' पुस्तक को भक्त दर्शन ने अपने प्रयासों से गढ़वाल-कुमाऊं के सभी 95 विकासखंडों, जनपदीय उद्योग कार्यालयों और राजकीय पुस्तकालयों में भिजवाया था. उनका विचार था कि यह पुस्तक स्थानीय प्राकृतिक संसाधनों से नवीन स्वरोजगार के अवसर विकसित करने में विकासकर्मियों के मार्गदर्शन के काम आयेगी. पर 'देवो! क्य ब्यन तब'. शायद ही किसी सरकारी एवं गैर सरकारी नुमाइंदे ने इस पुस्तक को गम्भीरता से कभी लिया भी हो.

उद्यमी अमर सिंह रावत उन महानुभावों में हैं जिनको जमाना उस समय से लेकर आज तक नहीं पहचान पाया. यदि उनकी खोजी योग्यता को समय पर यथोचित मदद मिल जाती तो उत्तराखंड के औद्योगिक विकास की आज विकसित तस्वीर होती.

मूल बात यह है कि हमारा पहाड़ी समाज कब अपनों की कद्र करना सीखेगा? ❍

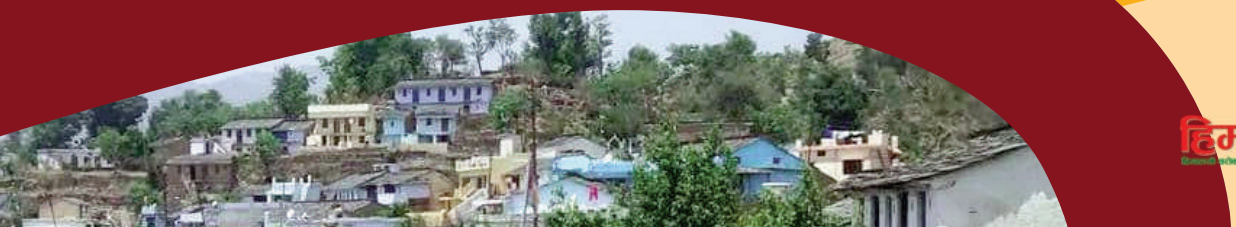

स्वरोजगार से आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ेगा पहाड़

अजेय कुमार, प्रदेश महामंत्री (संगठन) भाजपा, उत्तराखंड

प्रदेश सरकार की प्रवासी मजदूरों को रोजगार के लिए ऋण प्रदान करने की यह योजना एक क्रांतिकारी और बदलाव वाली सिद्ध हो रही है. प्रदेश लौटकर आए प्रवासी श्रमिक आत्मनिर्भर हुए हैं और अपना रोजगार करके परिवार का भरण-पोषण कर रहे हैं. सरकार का प्रयास है कि इस योजना की जानकारी गांवों तक पहुंचें ताकि ज्यादा से ज्यादा लोग इस योजना का लाभ उठा सकें. शहरों से अपने-अपने गांवों को लौटे व्यक्तियों को आत्मनिर्भर होते हुए देखकर बेहद प्रसन्नता होती है. 'शुद्ध हवा और पानी' के साथ प्रकृति की खूबसूरती के बीच सरकारी योजनाओं का लाभ उठाते हुए आत्मनिर्भरता की तरफ बढ़ते भाई-बहनों से संवाद के दौरान रोचक जानकारियां मिली.

स्वरोजगार के माध्यम से प्रदेश में भारी संख्या में लोगों को रोजगार मिल रहा है. वैश्विक महामारी कोरोना वायरस के इस विकट काल में उत्तराखंड में लाखों प्रवासी वापस लौटे हैं. लगभग 80 फीसदी लोग पहाड़ों में रुक गए हैं जिनके लिए 150 से अधिक तरह के कार्य मुख्यमंत्री स्वरोजगार योजना के तहत कराए जा रहे हैं. जिला योजना का 40 फीसदी स्वरोजगार योजना पर व्यय हो रहा है. अब तक लगभग 6500 से अधिक आवेदन सहकारी समितियों द्वारा और लगभग दो हजार लोगों को बैंकों द्वारा ऋण दिया गया है, शेष को ऋण देने की कार्यवाही गतिमान है, ताकि स्वरोजगार को और गति मिल सके.

वैसे भी स्वरोजगार शब्द अति उत्साह और खुशी प्रदान करने वाला है. प्रदेश के अलग-अलग क्षेत्रों, दोनों मंडलों में प्रवास और बैठकों के दौरान हजारों युवाओं से मिलने, उनसे संवाद करने और उनके स्वरोजगार की जानकारी मिलने, उनके हावभाव देखने के बाद, यह लगा कि लोग स्वरोजगार से काफी प्रसन्न हैं. उन्हें यह प्रसन्नता उनके अपने अथक परिश्रम और प्रदेश सरकार की स्वरोजगार योजना के माध्यम से ही प्राप्त हो सकी है.

प्रधानमंत्री मोदी हैं स्वरोजगार योजना के मूल प्रेरणास्त्रोत

स्वरोजगार योजना के मूल प्रेरणास्त्रोत यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी हैं, जिन्होंने देश की युवा पीढ़ी को 'लोकल के लिए वोकल' का मंत्र दिया है. यह मंत्र युवाओं के लिए अपनी जड़ों यानी पहाड़ लौटने का एक उत्साही संकल्प सिद्ध हुआ है. कोरोना काल के दौरान दिल्ली, मुंबई और दूसरे बड़े शहरों एवं राज्यों से लौटने के बाद उत्तराखंड के मूल निवासी, जो कि अभी तक दूसरे शहरों व राज्यों

में प्रवासी थे, उन्होंने अपने गांव, शहर और कस्बे में लौटकर प्रदेश सरकार की स्वरोजगार योजना का लाभ लेकर आत्मनिर्भरता की ओर कदम बढ़ाया है.

लाखों लोग ले रहे हैं मुख्यमंत्री प्रवासी स्वरोजगार योजना का लाभ

प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री त्रिवेंद्र सिंह रावत द्वारा प्रवासी श्रमिकों को रोजगार के अवसर प्रदान करने के लिए लाई गई 'उत्तराखंड मुख्यमंत्री प्रवासी स्वरोजगार योजना' से अब तक लाखों लोग लाभान्वित हो चुके हैं; और अपना खुद का उद्योग शुरू करके अपना मालिक स्वंय बनकर आत्मनिर्भरता की ओर कदम बढ़ा रहे हैं. सशक्त और समृद्ध हो रहे हैं.

सरकार का प्रयास–गांव–गांव तक पहुंचें योजना की जानकारी

दरअसल, प्रदेश सरकार की प्रवासी मजदूरों को रोजगार के लिए ऋण प्रदान करने की यह योजना एक क्रांतिकारी और बदलाव वाली सिद्ध हो रही है. प्रदेश लौटकर आए प्रवासी श्रमिक आत्मनिर्भर हुए हैं और अपना रोजगार करके परिवार का भरण-पोषण कर रहे हैं. सरकार का प्रयास है कि इस योजना की जानकारी गांवों तक पहुंचें, ताकि ज्यादा से ज्यादा लोग इस योजना का लाभ उठा सकें. मैं जब शहरों से अपने-अपने गांवों को लौटे व्यक्तियों को आत्मनिर्भर होते हुए देखता हूं, तो मुझे बेहद प्रसन्नता होती है. 'शुद्ध हवा और पानी' के साथ प्रकृति की खूबसूरती के बीच सरकारी योजनाओं का लाभ उठाते हुए आत्मनिर्भरता की तरफ बढ़ते भाई-बहनों से संवाद के दौरान रोचक जानकारियां मिलती हैं.

वीरचंद्र सिंह गढ़वाली पर्यटन स्वरोजगार योजना के तहत बसों की खरीद पर 50 प्रतिशत की छूट, पंडित दीनदयाल उपाध्याय गृह आवास-विकास योजना के तहत लगभग 2500 होम स्टे का पंजीकृत होना, 106 रूरल ग्रोथ सेंटरों की मंजूरी तथा 500 सर्वाधिक पलायन वाले गांव के स्वयं सहायता समूहों को ब्याज मुक्त ऋण विभिन्न विभागों के अंतर्गत सात लाख से अधिक लोगों को रोजगार यह साबित करता है कि लोग स्वरोजगार करके अधिक प्रसन्न है. न किसी की गुलामी, न दूसरे की सेवा, अपना कारोबार, अपनी आय.

अब वापस शहरों को नहीं लौटना चाहते प्रवासी

राज्य सरकार का पूरा प्रयास है कि उद्यमिता को बढ़ावा दिया जाए और पहाड़ के व्यक्ति को पहाड़ में ही रोजगार मिले, स्वरोजगार के माध्यम से प्रदेश की खुशहाली में अपना योगदान दें. इससे युवाओं को स्वरोजगार मिलेगा और प्रदेश से पलायन रुकेगा. कोरोना काल में ही लाखों लोग वापस अपने सूबे में लौटे हैं और उन्होंने मुख्यमंत्री स्वरोजगार योजना का लाभ उठाकर अपना-अपना व्यवसाय शुरू किया है, और अब वो वापस शहरों को नहीं लौटना चाहते हैं. यह एक सराहनीय और क्रांतिकारी कदम है, जो प्रदेश सरकार के प्रयासों से ही संपन्न हो पाया है.

मुख्यमंत्री स्वरोजगार योजना के जरिए अपना व्यवसाय शुरू करने के लिए सरकार से आर्थिक मदद लेना बेहद आसान है. 18 वर्ष का युवा भी ऑनलाइन आवेदन के जरिए बेहद आसानी से अपना मूल निवासी प्रमाण पत्र, पासपोर्ट साइज फोटो, विस्तृत परियोजना रिपोर्ट, आधार कार्ड कॉपी, शपथ पत्र, शिक्षा का प्रमाण पत्र, बैंक डिटेल कॉपी, जाति प्रमाण पत्र, दिव्यांग प्रमाणपत्र और व राशन कार्ड कॉपी के जरिए आसानी से ऋण ले सकता है. अपना उद्यम शुरू करके आत्मिर्भरता की तरफ बढ़ने वाले युवाओं के साथ प्रदेश सरकार खड़ी है. वह अपने हुनर और परिश्रम से न सिर्फ पहाड़ की खुशहाली में अपना योगदान दें बल्कि पहाड़ के स्थानीय उत्पादों को अंतरराष्ट्रीय स्तर तक पहुंचाने का भगीरथ प्रयास करें. ❍

अनिता मैठाणी, देहरादून

प्रकृति और जैविक उत्पादों से दिखाई स्वरोजगार की राह...

स्थानीय संसाधन आधारित स्वरोजगार को मूल मंत्र मानने वाले निम्न मध्यमवर्गीय परिवार में जन्मे जगदम्बा प्रसाद मैठाणी वर्ष 1997 से अपने जन्म स्थान पीपलकोटी चमोली और उसके आसपास स्वरोजगार के नवाचारी प्रयासों के लिए कृत संकल्प हैं. उनके ज्यादातर मित्र उन्हें जेपी के नाम से जानते हैं. शुरुआत में नेशनल एडवेंचर फाउंडेशन से जुड़े होने की वजह से एडवेंचर टूरिज्म और इकोटूरिज्म के प्रति सदैव रूझान रहा. लेकिन वो जानते थे कि उत्तराखंड में इकोटूरिज्म या इससे मिलते-जुलते स्वरोजगार के संसाधन जैसे- जैविक उत्पाद, हस्तशिल्प, जड़ी-बूटी की खेती और फल तथा उद्यानिकी पहाड़ों में रोजगार उपलब्ध करा सकते हैं.

उत्तराखंड के पर्वतीय क्षेत्रों में बेहतर शिक्षा, स्वास्थ्य और स्वरोजगार के ना होने की वजह से ही पलायन हो रहा है. इसलिए अगर स्थानीय संसाधनों जैसे उद्यानिकी, बायोटूरिज्म, जैविक खेती, जड़ी-बूटी की खेती, फलदार, चारा और सजावटी पेड़-पौधों की नर्सरी को स्थापित करने और संचालित करने के लिए अगर हम पहाड़ में ही युवाओं को इस कार्य को करने के लिए प्रेरित करें तो उनको बेहतर रोजगार मिलेगा और मजबूरी का पलायन जो सिर्फ रोजी-रोटी के लिए है उस तरह का पलायन भी नहीं करना पड़ेगा. इन्हीं महत्वपूर्ण बिन्दुओं को ध्यान में रखते हुए 5 दिसम्बर 1997 को उन्होंने सोसायटी फॉर कम्यूनिटी इन्वॉल्वमेन्ट इन डेवलपमेन्ट (एसएफसीआईडी) के नाम से एक सामाजिक संस्था का गठन किया. और वर्ष 1999 के मार्च माह में आए भूकम्प ने उन्हें पीपलकोटी में ही रह कर काम करने के लिए स्वयं और स्थानीय युवाओं को प्रेरित किया. तब यूएनडीपी, पर्यावरण शिक्षण केन्द्र और

वन एवं पर्यावरण मंत्रालय भारत सरकार जिसे अब वन, पर्यावरण एवं क्लाइमेन्ट चेंज मंत्रालय भारत सरकार के नाम से जाना जाता है के सहयोग से पीपलकोटी चमोली में राज्य के पहले बायोटूरिज्म पार्क की स्थापना की. वे बताते हैं कि इस कार्य को आगे बढ़ाने मे सबसे अधिक सहयोग तत्कालीन ग्राम प्रधान स्व. श्रीमती नंदी वर्मा, स्व श्री कैलाश लाल साह, स्व. श्री अब्बल सिंह तड़ियाल और उनकी टीम के सदस्यों ने किया. आज इस बायोटूरिज्म पार्क से कई स्थानीय युवाओं और महिलाओं को अलग-अलग प्रकार के रोजगार प्राप्त हो रहे हैं. जिनमें से प्रमुख हैं- रिंगाल हस्तशिल्प, प्राकृतिक रेशा-भांग, कंडाली और भीमल आधारित स्वरोजगार, नर्सरी, फल संरक्षण, ट्रैकिंग-टूर आदि. हालांकि बाद में सोशियल आर्मी (गांव-गांव में सामाजिक कार्य हेतु गठित युवाओं के समूह) और क्षेत्र के महिला मंगल दलों के साथ चलाये गये शराब विरोधी आंदोलन के

चलते उन्हें कुछ सफेद पोश व्हाइट कॉलर बुद्धिजीवियों (जो अपने आपको समाजसेवक कहते हैं) के द्वारा किये गये षडयंत्र की वजह से जनपद चमोली के शराब विरोधी आंदोलन में फंसा दिया गया और उन्हें 22 दिन जेल में रहना पड़ा. लेकिन रिकॉर्ड समय में न्याय मिला और निर्दोष साबित हुए. तब संकल्प लिया कि पीपलकोटी में कभी भी शराब का ठेका नहीं खुलने देंगे. ये संकल्प आज भी जारी है, इसी संघर्ष के दौर में पूर्व में बनाये गये स्वयं सहायता समूहों के प्रतिनिधियों और शुभेच्छुओं की प्रेरणा से नये सामाजिक संगठन के रूप में आगाज फैडरेशन के नाम से नया आगाज किया, इसका पूरा नाम (अलकनन्दा घाटी शिल्पी फैडरेशन) है.

स्थानीय स्वरोजगार को बढ़ावा देने के लिए पिछले 16 वर्षों से पर्यटन, तीर्थाटन, जड़ी-बूटी खेती, स्थानीय परंपरागत फसलों का संरक्षण एवं खेती, उद्यानिकी के क्षेत्र में पीपलकोटी में सर्वाधिक प्रजाति के अखरोट, हैजलनट, पीकन नट, चेस्टनट, आड़ू, पोलम, कीवी, खुमानी, परसीमन का जीन बैंक बायोटूरिज्म पार्क में स्थापित किया जा रहा है. इस कार्य में 56 से अधिक यूथ जुड़े हुए हैं.

पिछले 16 वर्षों में उत्तराखंड बांस एवं रेशा विकास परिषद के सहयोग से 19 मास्टर ट्रेनर प्रशिक्षित किये जो आज विभिन्न विभागों और एजेन्सियों में प्रशिक्षण देकर स्वरोजगार चला रहे है. आगाज और बैम्बू बोर्ड के संयुक्त प्रयासों के बाद बनी स्वायत्त सहकारिताओं में से एक हिमालयी स्वायत्त सहकारिता और जिला उद्योग केन्द्र

चमोली द्वारा हाल में पीपलकोटी में रिंगाल काष्ठ हस्तशिल्प ग्रोथ सेन्टर की स्थापना की गयी है. जिसका लोकार्पण 9 नवम्बर 2020 को राज्य के माननीय मुख्यमंत्री श्री त्रिवेन्द्र सिंह रावत ने किया. आज इस ग्रोथ सेन्टर से 200 से अधिक अलग-अलग शिल्प कलाओं के हस्तशिल्पी जुड़े हुए हैं.

पूर्व में संस्था द्वारा हिमोत्थन सोसायटी के सहयोग और नवाजबाई रतन टाटा ट्रस्ट के सहयोग से डांस कंडाली आधारित परियोजना संचालित की. जिसमें जनपद चमोली के 100 से अधिक बुनकर तथा रेशा उत्पादक जुड़े हुए थे. वर्तमान में ये समूह स्वतंत्र रूप से कार्य कर रहे हैं. पीपलकोटी में ही वर्ष 2005-06 में सबसे पहले औद्योगिक भांग आधारित स्वरोजगार का कार्य प्रारंभ हुआ बाद में नंदप्रयाग घाट रोड पर स्थित मंगरोली में नंदाकिनी स्वायत्त सहकारिता से जुड़ी 26 से अधिक महिलायें औद्योगिक भांग और डांस कंडाली का कुटीर उद्योग उत्तराखंड बांस एवं रेशा विकास परिषद के सहयोग से संचालित कर रही हैं.

बायोटूरिज्म के बारे में बताते हुए जे पी मैठाणी कहते हैं कि- आपने अधिकतर प्रकृति पर्यटन या इकोटूरिज्म के बारे में ही ज्यादा सुना होगा इकोटूरिज्म का सीधा-सीधा सम्बन्ध हमारी इकोलॉजी, पर्यावरण और इकोनॉमी से जुड़ी हुई है. जबकि हमारा मानना है इकोलॉजी या इकोनॉमी बाद में आती है पहले बायोम है यानी जीवन का प्रादुर्भाव और प्रकृति से अंतर्सम्बन्ध। इसी मूल आधार को ध्यान में रखते हुए पीपलकोटी में प्रदेश के पहले बायोटूरिज्म पार्क की

स्थापना की गयी जहां से आज तक सैकड़ों युवाओं, किसानों को प्रशिक्षित किया गया है साथ ही साथ संस्था में समय समय पर कार्य करने वाले अलग-अलग कार्यकर्ताओं में अनेक अलग क्षेत्रों में अपने अलग-अलग उद्यम स्थापित किये हैं या वे अलग-अलग क्षेत्रों में अपनी सेवायें दे रहे हैं. डाबर इंडिया के साथ मिलकर वर्तमान में 400 से अधिक किसान परिवारों को कुटकी, कपूर कचरी, क्वीराल, वरूणा, लोध्रा की खेती का प्रोत्साहन दिया जा रहा है. कंडाली की चाय, रोजहिप टी, ऑरेंज पील, स्थानीय दालें एवं अनाज, मंडुवा, झंगोरा, राजमा, चैलाई आदि के उत्पादों के विपणन में कई परिवारों को रोजगार दिया गया है.

केदारनाथ वन्यजीव प्रभाग के माध्यम से संस्था द्वारा 25 युवाओं को नेचर गाइड, मधुमक्खी पालन और ऑर्गेनिक खेती के लिए प्रोत्साहित कर उन्हें स्थानीय स्तर पर स्वरोजगार देने का प्रयास किया जा रहा है. नॉट ऑन मैप कम्पनी के साथ मिलकर संस्था द्वारा जनपद चमोली में 10 से अधिक होम स्टे स्थापित किये गये जिन्हें स्वतंत्र रूप से उनके स्वामी स्वयं चला रहे हैं. साथ ही पीपलकोटी के आसपास के 6 ट्रैकिंग रूट विकसित किये जा रहे हैं.

पीपलकोटी फल संरक्षण केन्द्र के माध्यम से कई परिवारों को समय-समय पर रोजगार दिया जाता है, नर्सरी के माध्यम से नियमित रूप से 4 परिवारों को पिछले 16 वर्षों से रोजगार दिया जा रहा है. यही नहीं पीपलकोटी में ओपन क्लासेस के माध्यम से माइक्रोप्लानिंग, पीआरए का प्रशिक्षण, स्वयं सहायता समूह गठन एवं प्रबंधन, मधुमक्खी पालन, जैविक खेती, नर्सरी स्थापना, प्राकृतिक रेशा प्रोसेसिंग एवं डिगमिंग का प्रशिक्षण, रॉक क्लाइम्बिंग, टूर ट्रैवल गाइड, बर्ड वॉचिंग आदि कई प्रशिक्षण कार्यक्रम समय-समय पर आयोजित किये जाते हैं जिनका प्रमुख उद्देश्य बेरोजगारों को स्थानीय संसाधन आधारित स्वरोजगार प्रदान करना है.

हाल ही में संस्था को पर्यावरण के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने हेतु उत्तराखंड पर्यावरण सम्मान 2016 अर्थ डे नेटवर्क द्वारा ट्रीज फॉर अर्थ के अलावा 'देवभूमि रत्न' सम्मान दिया गया. पूर्व में वर्ष 2005 में वॉशिंगटन डीसी में वर्ल्ड बैंक द्वारा वर्ल्ड बैंक रिकगनिशन अवार्ड वॉशिंगटन में दिया गया. इससे पहले सीएसआर टाइम्स और प्लस एप्रोच फाउंडेशन द्वारा दधीचि अवार्ड, केदारनाथ आपदा के पश्चात राहत सामग्री वितरण और पुनर्वास के प्रयासों के लिए तत्कालीन मुख्यमंत्री विजय बहुगुणा द्वारा 13 दिसम्बर 2013 को सम्मानित किया गया. आगाज फैडरेशन उत्तर भारत में अर्थ चार्टर इंटरनेशनल, साउथ एशिया यूथ इन्वायरन्मेन्ट नेटवर्क द्वारा मान्यता प्राप्त एकमात्र संस्था है.

पिछले 23 वर्षों में सामाजिक क्षेत्र में काम करते हुए जे.पी. मैठाणी बताते हैं कि पारिवारिक सहयोग, अच्छे मित्रों और मार्गदर्शकों, टीम, स्थानीय जन प्रतिनिधियों के साथ-साथ स्थानीय जन समुदाय के सहयोग के बिना सामाजिक कार्य बहुत मुश्किल है. आप पर कई तरह की जिम्मेदारियां होती हैं. दूसरी ओर सामाजिक संगठनों के प्रति वर्तमान सरकार का रवैया सहयोगात्मक नहीं है. सरकारी विभागों में परियोजनाओं के स्वीकार कर लिए जाने के बाद फंड समय पर नहीं मिलता, कमीशनखोरी आज भी जारी है. लेकिन हमारे प्रयास जारी हैं क्योंकि हमें पहले से पता था कि इस क्षेत्र की चुनौतियां क्या हैं. इसलिए निराश नहीं होते और लगातार प्रयासरत हैं. बात जारी है वो कहते हैं अपने-अपने हिस्से का संघर्ष जारी है लेकिन जिस पहाड़ ने हमको इस लायक बनाया है उसके लिए कुछ करना है. वो मुस्कुराकर गुनगुनाते हैं-

रास्ता है लम्बा भाई मंजिल है दूर,
मिलके चलेंगे जीतेंगे जरूर.

रवांई में बहुत संभावनाएं हैं विकास की...

दिनेश रावत
अध्यापक एवं लेखक

हिमालय के आगोश में बसे सीमांत रवाँई की अधिसंख्य आबादी आज भी उन्हीं ग्राम्य अंचलों में निवास करती है जहाँ दिन का शुभारम्भ देवस्थलों में बजने वाले वाद्यों के 'परभात' तथा अवसान 'नमती' के तालों के साथ होता है.

सांसारिक चहल–पहल से दूर प्रकृति के आलिंग में बसा यह वही क्षेत्र है जो वैश्वीकरण की आबो–हवा के बीच जड़ों से जुड़कर अपनी पहचान बनाए हुए है. प्राकृतिक सौंदर्य, जल की पर्याप्ता, मौसम की अनुकूलता तथा कृषि–बागवानी के लिए उपयुक्त जमीन की उपलब्धता के अतिरिक्त देश व दुनिया के दिलोरों को ललकारती पर्वत श्रृंखलाएं, स्वर्गारोहिणी का सुखद अहसास और लोक आस्था के महाबिम्बों के रूप में विद्यमान देवालयों से शोभायमान यह क्षेत्र कला, साहित्य एवं संस्कृति के अध्येयताओं, पर्यटकों एवं तीर्थयात्रियों के लिए आकर्षण का केन्द्र रहा है.

ऐतिहासिक दृष्टि से देखें तो कमल नदी के बायें तट पर द्वितीय सदी ईसा पूर्व की पकी ईंटों से निर्मित उड़ते हुए गरूड़ पक्षी आकृति की यज्ञ वेदी प्राप्त हुई है. महाभारत काल में जिस यमुना तट पर अश्वमेघ यज्ञों का वर्णन मिलता है वह भी इसी भू–भाग से अभिउदित होकर भारत के एक विशाल भू–क्षेत्र को अभिसिंचित करते हुए आर्थिकी समृद्धि व आस्था का पैगाम देती आ रही है.

महाभारतकालीन संस्कृति इतने गहरे तक रची–बसी है कि पांडवों से जुड़े आयोजन तथा पांडव संबंधित गाथात्मक–कथात्मक आख्यान लोक साहित्य को समृद्धि प्रदान किए हुए हैं. लाखामण्डल के अतिरिक्त प्रत्येक ग्राम मध्य पांडव स्मृति स्थल के रूप में पांडव थाती और चौंरी पांडवों के पराक्रम को प्रतिध्वनित करती हैं. पांडव संबंधी अनुष्ठानों के दौरान लौकिक एवं अलौकिक संस्कृति का मंजुल समन्वय देखते ही बनता है. उत्सवधर्मिता ऐसी कि जीवन ही ज्योर्तिमय नहीं मृत्यु भी महोत्सव है. पर्व, त्योहार एवं उत्सव के अवसरों पर गीत,संगीत व नृत्य चौपालें लोकरंगों की सप्तरंगी छटा के माध्यम से लोक व लोकसंस्कृति के दर्शन सहज हो जाते हैं. डग–डग व पग–पग पर बने देवालय तथा दैविय चमत्कार को उद्घाटित करते गीत–गाथात्मक आख्यान लोक कला व संस्कृति के बहुआयामी पक्षों को प्रतिबिम्बित करते हैं. क्षेत्र में विद्यमान बर्फीली चोटियाँ, नाना–प्रकार की वनस्पतियों की उपलब्धता, जल, जंगल,जमीन की पर्याप्ता लोगों के सामाजिक–आर्थिक समृद्धि के कारक बने हुए हैं.

कृषि–बागवानी एवं सांस्कृतिक ही नहीं बल्कि पर्यटन व तीर्थाटन की अपार संभावनाएं समेटे इस क्षेत्र में बने भवनों की विशिष्टता तथा प्रचलित परम्पराएं भी संभावनाओं के नए द्वार खोलते हैं.

रेशे को पेशे में बदलकर यदि भीमल, कंडाली, भांग, तिमला, मालू, रामबांस, रिंगाल आदि के साथ कुछ अभिनव प्रयोग किए जाए तो रोजगार व आर्थिक समृद्धि को गति मिलनी स्वाभाविक है. परम्परागत कृषि में नवीन एवं आधुनिक तकनीकों तथा उच्च गुणवत्ता वाले बीज का उपयोग कर कृषि पैदावार बढ़ाई जा सकती है तो परम्परागत फसलों यथा- लाल चावल, मंडुवा, झंगोरा, दलहन व तिलहन के लिए बाजार उपलब्ध करवाते हुए आर्थिकी को सुधारक जा सकता है. फल–फूलों की उत्पादकता से मात्र बेकार भूमि का ही उपयोग नहीं होगा बल्कि जूस, मुरब्बा, अचार आदि बनाकर आर्थिक लाभ भी अर्जित किया जा सकता है. रवाँई में संसाधनों की कमी नहीं है इसी कारण पलायन भी अति न्यून है. बावजूद इनके ऐतिहासिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, पुरातात्त्विक एवं प्राकृतिक दृष्टि से समृद्ध हिमालय राज्य का प्रतिनिधित्व करने वाला यह क्षेत्र आज भी समुचित विकास की राह तलाश रहा है. जरुरत उपलब्ध संसाधनों को तलाशते हुए सुनियोजित एवं समुचित उपयोग किए जाने की है. यदि ऐसा होता है तो साहसिक, ग्राम्य, धार्मिक व सांस्कृतिक पर्यटन ही नहीं बल्कि तीर्थाटन के क्षेत्र में भी वांछित परिणाम प्राप्त किए जा सकते है लेकिन इसके लिए सरकारी एवं गैर-सरकारी सभी संगठनोंको प्रभावी व व्यापक कार्य योजना बनाकर ईमानदार प्रयास किए जाने की जरुरत है जिसमें प्रशिक्षण, प्रदर्शन, उत्पादन,मार्गदर्शन से लेकर बाजार तक के सभी चरण शामिल हों. ❍

स्वरोजगार से 25 लोगों को रोजगार दे रहा युवा

आरूशी, शोधार्थी

मनीष ने डेढ़ लाख रुपए की पूंजी व सीमित संसाधनों के साथ अपना स्वरोजगार शुरू किया था और आज उनका वार्षिक टर्नओवर लगभग 24-25 लाख रुपए है. शुरुआत में परिवार के सदस्यों ने ही स्वरोजगार के कार्य को आगे बढ़ाया. लेकिन आज वह 20-25 लोगों को रोजगार दे रहे हैं. मनीष की सफलता से प्रभावित होकर आज कई युवा भी उनसे प्रेरित हो रहे हैं.

किसी भी समाज एवं राष्ट्र की उन्नति व प्रगति का भार युवाओं के कंधों पर होता है. यही कारण है कि समाज की दशा-दिशा के निर्धारण में उनकी अहम भूमिका होती है. ऐसे ही एक युवा हैं मनीष सुंदरियाल जो पौड़ी गढ़वाल जिले के नैनीडांडा ब्लॉक अंतर्गत ग्राम डुंगरी निवासी हैं और स्वरोजगार के जरिए युवाओं के प्रेरणा स्त्रोत बन रहे हैं. मनीष 1998 से ही स्वरोजगार के जरिए स्थानीय उत्पादों को उत्तराखंड में ही नहीं, दूसरे राज्यों में भी पहुंचा रहे हैं। उन्होंने 22 वर्ष पूर्व अपने पिता स्व. श्री विजय सुंदरियाल जी के साथ मिलकर कारोबार की शुरुआत की थी। वो इस वक्त खाद्य एवं पेय पदार्थों का प्रयोग कर विभिन्न उत्पाद जैसे कि अचार, सॉसेज, स्क्वैश, लूंप-मसाले आदि तैयार कर रहे हैं. इनके इस प्रयास से स्थानीय लोग भी स्वरोजगार के प्रति जागरुक हो रहे हैं और अपने-अपने व्यवसाय में जुटे हैं.

मनीष बताते हैं कि शुरुआत में स्वरोजगार का मार्ग अपनाना एक चुनौतीपूर्ण प्रयास था. लेकिन अपने क्षेत्र, घर-परिवार से दूर नौकरी करना उन्हें गंवारा न था और उन्होंने स्वरोजगार को एक स्थायी विकल्प के रूप में चुना और परिवार के साथ लघु उद्योग में जुट गए. उनका कहना है कि 90 के दशक में स्वरोजगार के पथ को चुनना न केवल कठिनाई भरा था बल्कि काफी चुनौतीपूर्ण भी था. मनीष कहते हैं कि जिस दौर में इनके साथी शहरों की ओर अपना रूख

कर रहे थे, उस दौर में उन्होंने अपने ही सूबे में रहकर स्वरोजगार को चुना और अपने मजबूत इरादों के चलते विपरीत परिस्थितियों में भी हार नहीं मानी व लगातार अपने लक्ष्य की ओर बढ़ते रहे. मनीष ने आम, कटहल, तिमला, सेमल, जंगली आंवला, माल्टा, बुरांश, अदरक, लखोर मिर्च, हल्दी आदि उपज के जरिए विभिन्न खाद्य उत्पाद तैयार किए. इसके अतिरिक्त अन्य पहाड़ी उत्पादों जैसे- तोर, सोयाबीन, मंडुआ, पहाड़ी दालें , झोंगर, लाल चावल को अलग-अलग

क्षेत्रों से एकत्रित कर बाजार तक पहुंचाते हैं. दरअसल उत्तराखंड में स्थानीय उत्पादों को बाजार तक पहुंचाना भी बेहद चुनौती भरा काम है. दूर-दराज के गावों से सड़कों तक उत्पादों को पहुंचाने में ही इतनी लागत लग जाती है कि मुनाफा नहीं मिल पाता. मनीष ने शुरुआती दौर में गढ़वाल से लेकर कुमाऊं तक विभिन्न शहरों में स्वयं जाकर उपभोक्ताओं से संपक किया और उत्पादों को ''तृप्ति'' नाम से बाजार में उपलब्ध कराया. मनीष कहते हैं कि स्वरोजगार के इतने सालों बाद भी बाजार तक पहुंच और उचित मूल्य मिलना अभी भी चुनौती है. पर्वतीय क्षेत्रों में क्रय-विक्रय केन्द्र, उत्पादों का

समर्थित मूल्य निश्चित हो जाये तो इस समस्या का समाधान निकाला जा सकता है.

डेढ़ लाख रुपये से शुरू किया था कारोबार

मनीष ने डेढ़ लाख रुपए की पूंजी व सीमित संसाधनों के साथ अपना स्वरोजगार शुरू किया था और आज उनका वार्षिक टर्नओवर लगभग 24-25 लाख रुपए है. शुरुआत में परिवार के सदस्यों ने ही स्वरोजगार के कार्य को आगे बढ़ाया. लेकिन आज वह 20-25 लोगों को रोजगार दे रहे हैं. मनीष की सफलता से प्रभावित होकर आज कई युवा भी उनसे प्रेरित हो रहे हैं. मनीष कहते हैं कि स्वरोजगार में सबसे अहम है आपका व्यवहार और ग्राहकों का भरोसा जीतना. 'सुंदरियाल' अपने व्यवसाय के माध्यम से क्षेत्र के सामाजिक-आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं. मनीष कहते हैं कि आज तो कोई भी युवा मुख्यमंत्री स्वरोजगार योजना के जरिए अपना काम शुरू कर सकते हैं लेकिन सरकार या ग्राम सभा के स्तर पर उस वक्त मुझे कोई मदद नहीं मिली. मनीष का मानना है कि युवाओं के कौशल को परखने के लिए सरकारी एवं गैर सरकारी स्तर पर कार्य होने चाहिए. यह एक अच्छी बात है कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का 'वोकल फॉर लोकल' अभियान युवाओं को प्रेरित कर रहा है और वे स्वरोजगार की दिशा में आगे बढ़ रहे हैं. ❍

पर्वतारोहण और ट्रैकिंग से स्वरोजगार की पहल

उत्तरकाशी जिले के सीमान्त विकासखण्ड मोरी के दूरस्थ गांव सांकरी में वर्ष के 10 माह तक पर्यटकों की आमद देखने को मिलती है . जनवरी और फरवरी माह में यह सम्पूर्ण घाटी बर्फ से ढक जाती है . यहां पर हरे–भरे जंगल, गोविन्द वन्यजीव पशुविहार, सेब के बागान, पास में बह रही सुपीन नदी, हरकीदून बुग्याल, केदारकांठा ट्रैक, जुड़ी ताल की सैर, इसके अलावा इस घाटी में सैकड़ों रमणिक स्थल हैं जिनकी यात्रा सौड़–सांकरी गांव से आरम्भ होती है . यहीं से चैन सिंह रावत की कहानी भी शुरू होती है .

हिमांतर ब्यूरो, देहरादून

स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी श्रीराम शर्मा के गीत 'करो राष्ट्र निर्माण बनाओ मिट्टी से सोना' जी हां! इस गीत की पंक्तियों को चरितार्थ कर दिखाया है उत्तरकाशी जिले के दूरस्थ गांव सौड़-सांकरी के चैन सिंह रावत ने. उन्होंने पर्वतारोहण और ट्रैकिंग के काम को पर्यटन व्यवसाय से जोड़ा है. अब उनके गांव के हर नौजवान के पास 'होम स्टे' के रूप में स्वरोजगार है.

उत्तरकाशी जिले के सीमान्त विकासखण्ड मोरी के दूरस्थ गांव सांकरी में वर्ष के 10 माह तक पर्यटकों की आमद देखने को मिलती है. जनवरी और फरवरी माह में यह सम्पूर्ण घाटी बर्फ से ढक जाती है. यहां पर हरे-भरे जंगल, गोविन्द वन्यजीव पशुविहार, सेब के बागान, पास में बह रही सुपीन नदी, हरकीदून बुग्याल, केदारकांठा ट्रैक, जुड़ी ताल की सैर, इसके अलावा इस घाटी में सैकड़ों रमणिक स्थल हैं जिनकी यात्रा सौड़-सांकरी गांव से आरम्भ होती है. यहीं से चैन सिंह रावत की कहानी भी शुरू होती है. इसी गांव में जन्में चैन सिंह रावत ने यहां की मिट्टी और पत्थर में जीविका ढूंढी. आज स्थानीय युवाओं को स्वावलम्बी बना दिया. पिछले 10 वर्षों से चैन सिंह रावत के नेतृत्व में संपूर्ण गांव में होमस्टे, ट्रैकिंग, पर्वतारोहण का कारोबार फल-फूल रहा है. यहां

पंहुचने वाला पर्यटक चिन्ता मुक्त हो जाता है. होम स्टे पर उनकी मेहमाननवाजी ही उनके सारे दुखों को हर लेती है. आगंतुकों के लिए बहुत ही अच्छी और सुलभ व्यवस्था ग्रामीण लोग करते हैं.

उत्तरकाशी की टौंस-यमुना घाटी में बसे गांव प्राकृतिक सुंदरता के लिए विख्यात हैं. जिले का यह पहला गांव है जहां हर परिवार होमस्टे के कारोबार से जुड़ा हुआ है. यहां के वुडस्टोन के मकान लोगों के मन में ठहरने की जिज्ञासा पैदा करते हैं. यही वजह है कि

चैन सिंह रावत ने यहां पर्यटन व्यवसाय के क्षेत्र में अलग-अलग तरह के उपादान आरम्भ किये हुए हैं. वह पर्यटकों के साथ गाइड का काम करते हैं तो वहीं किचन का काम भी संभालते हैं. वह कुशल पर्वतारोही हैं, तो वहीं आपदा प्रबंधन के मुख्य प्रशिक्षक भी हैं. नेहरू इंस्टिट्यूट ऑफ मॉउण्टेनिंग उत्तरकाशी से एडवेंचर्स का कोर्स प्राप्त करके चैन सिंह रावत पिछले 10 वर्षों से गांव में लोगों को होमस्टे, साहसिक पर्यटन जैसे कार्यों के लिए उत्साहित कर रहे हैं. घर-घर जाकर लोगों को होमस्टे की बारकियां बता रहे हैं.

सुपीन नदी के तट पर बसे सौड़-सांकरी गांव के लोग बताते हैं कि चैन सिंह रावत और भगत सिंह रावत ने होमस्टे के कार्य से लोगों को जोड़ा है. चैन सिंह ही हैं जो आगंतुकों को स्थानीय पकवानों की एक-एक रेसिपी के बारे में बताते हैं. फलस्वरूप इसके मंडुवे की रोटी, जख्या का तड़का, और नागदोण जैसी वन-औषधि होमस्टे पर मेहमानों को परोसी जाती हैं. बता दें कि चैन सिंह ने खुद के घर से होमस्टे का कार्य आरंभ किया और ट्रैकिंग, एडवेंचर आदि काम्मों को होमस्टे का हिस्सा बनाया.

इस कार्य को कैसे विकसित किया, क्या कठिनाई आई, कहां से ऐसा विचार आया. बहुप्रतिभा के धनी चैन सिंह रावत ने इन विषयों पर वेबाकी से अपनी राय बताई. कहा कि वैसे तो वह साल 2000 से इस कार्य के साथ जुड़े हैं. पर 2010 से उन्होंने अपने गांव में होमस्टे, पर्वतारोहण आदि पर्यटन का कारोबार विधिवत आरम्भ किया है. एनआईएम से पर्वतारोहण का प्रशिक्षण प्राप्तकर उन्होंने साहसिक पर्यटन के क्षेत्र में कदम पसारे हैं. पहले पहल वे हरकीदून व दयारा बुग्याल आदि स्थानों पर आने वाले पर्यटकों के साथ गाईड का काम करते रहे, यह क्रम उनका जारी रहा और साल 2010 में हरकीदून कम्पनी की स्थापना करके खुद का कारोबार आरम्भ कर दिया. उन्होंने आगे बताया कि तब गांव में कोई भी परिवार होमस्टे का काम नहीं करता था. कभी सांकरी में एक मात्र गेस्टहाउस था, जो गढवाल मण्डल विकास निगम का था जो आज भी है. जब सौड़-सांकरी में पर्यटकों की आमाद बढती थी, इन पर्यटको को रहने-खाने की समस्याओं का सामना करना पड़ता था. सो यहीं से होमस्टे का विचार सामने आया कि क्यों न गांव के हर परिवार को इस कारोबार से जोड़ा जाए. इस कार्य के लिए उन्हें कुछ लोगों ने आर्थिक मदद भी की. जिस कारण उनके इस व्यवसाय को देश-दुनिया में एक पहचान मिली है. मौजूदा समय में सौड़-सांकरी गांव के 90 परिवार होमस्टे का कारोबार करते हैं, और लोगों का यह कारोबार आजीविका का जरिया बन चुका है.

चैन सिंह रावत की यह कहानी बताती है कि उत्तराखंड राज्य में पर्यटन व्यवसाय स्वाबलंबन और स्वरोजगार की दिशा में मील का पत्थर साबित हो सकता है. जैसे कि चैन सिंह रावत ने सौड़-सांकरी गांव में करके दिखाया है. बस जरूरत है तो सरकार के सहयोग की. ❍

बुरांश को बनाया रोजगार का जरिया

प्रेम पंचोली, वरिष्ठ पत्रकार

अपनी दिनचर्या में पहाड़ी महिलाऐं जंगल में घास–पात के लिए जाती हैं तो उन्होंने कभी नहीं सोचा कि वापस घर जाकर उन्हें घास–पात के भी पैंसे मिलेंगे . हिमरोल गांव के आस–पास के दो दर्जन से भी अधिक गांव की महिलायें जब मार्च–अप्रैल के माह में जंगल को चारा–पत्ती, जलाऊन लकड़ी के लिए जाती हैं तो साथ में कुछ बुरांश के फूल तोड़कर भी लाती हैं . जिसे वे भरत सिंह राणा को 20रु . किलो के हिसाब से बेचती हैं . अर्थात एक तरफ घर व पशु के लिए व्यवस्था तो दूसरी तरफ बुरांश का फूल उनके लिए आर्थिकी का जरिया बन चुका है .

राज्य की यमुना घाटी का हरेक किसान अपनी खेती-किसानी के लिए विशेष तौर पर जाना जाता है. इस घाटी में लोग खेती-किसानी को ही महत्व देते हैं. उन्हें सरकार इसके लिए प्रोत्साहन करे या न करे उन्हें इसका कोई मलाल नहीं है. यही वजह है कि आज राज्य की एक मात्र यमुनाघाटी है जहां से पलायन का दूर-दूर तलक कोई वास्ता नहीं है.

यहां हम ऐसे ही एक शख्स से परिचय कराना चाहते हैं जिन्होंने बिना सरकारी सहायता के वह चमत्कार करके दिखाया जिसके लिए सरकारें व कम्पनियां बड़ी-बड़ी डीपीआर (डिटियेल प्रोजेक्ट रिपोर्ट) बनाती हैं. हो-हल्ला होता है. विज्ञापन ईजाद किये जाते हैं. सपने दिखाये जाते हैं. रोजगार का डंका पीटा जाता है. इसके अलावा प्रचार-प्रसार के सभी हथकण्डे ये सरकारी-गैर सरकारी लोग अपनाते हैं. मगर इसके इतर जो उत्तरकाशी जनपद के दूरस्थ गांव हिमरोल में भरत सिंह राणा ने करके दिखाया वह काबिले तारिफ इसलिए है कि जहां यातायात के नाम मात्र साधन हों और विधुत व दूरसंचार की सुविधा सरकारी विभाग के रहमोकरम पर हो तथा पानी की आपूर्ती भी सीमित हो व सरकारी रहनुमा क्षेत्र में रहने के लिए खानापूर्ती करता हो, इन परस्थितियों में भरत सिंह राणा ने स्थानीय फलोत्पादन और प्राकृतिक संसाधनों को बाजार और नगदी फसल के रूप में प्रस्तुत किया और इस क्षेत्र के लिए

मिशाल कायम कर दी.

अपनी दिनचर्या में पहाड़ी महिलाऐं जंगल में घास-पात के लिए जाती हैं तो उन्होंने कभी नहीं सोचा कि वापस घर जाकर उन्हें घास-पात के भी पैंसे मिलेंगे. हिमरोल गांव के आस-पास के दो दर्जन से भी अधिक गांव की महिलायें जब मार्च-अप्रैल के माह में जंगल को चारा-पत्ती, जलाऊन लकड़ी के लिए जाती हैं तो साथ में कुछ बुरांश के फूल तोड़कर भी लाती हैं. जिसे वे भरत सिंह राणा को 20रू॰ किलो के हिसाब से बेचती हैं. अर्थात एक तरफ

घर व पशु के लिए व्यवस्था तो दूसरी तरफ बुरांश का फूल उनके लिए आर्थिकी का जरिया बन चुका है. ऐसा इस क्षेत्र में पहली बार हुआ है. इस क्षेत्र में बुरांश प्रजाति के पेड़ों का भारी जंगल है. जिसे स्थानीय लोग यदा-कदा यूं कहते थे कि इतना सुन्दर फूल किसी काम का नहीं. इसको रोजगार से जोड़ने का काम भरत सिंह राणा ने कर के दिखाया. यही नहीं इस क्षेत्र में अन्य फल जैसे चूलू, सेब, माल्टा, आड़ू, खुबानी फलों का भी भरत सिंह राणा जूस, चटनी, जैम बनाकर बाजार में उतार रहा है. बुरांश के फूल का जूस तो वे भारी मात्रा में बना रहे हैं. वह बताते हैं कि इस यूनिट को विकसित करने में उसे लगभग 10 वर्ष का समय लग गया. क्योंकि उन्हें फलों द्वारा तैयार इस सामग्री के लिए बाजार ही उपलब्ध नहीं हुआ था. बताया है कि वे सेन्टर फॉर टेक्नोलॉजी एण्ड डेवलपमेन्ट सहसंपुर के आभारी हैं जिन्होंने उन्हें एक रास्ता दिखाया. भले ही आज उनके पास स्थानीय प्रशासन से लेकर राज्य स्तर तक का प्रशासन उनके काम की वाह-वाही क्यों न करे. मगर प्रारम्भ में इस काम को विकसित करने में बहुत ही कठिनाईयों का सामना करना पड़ा. अब तो भरत सिंह राणा अपनी ही जमीन पर क्षेत्र के तमाम फलों व फूलों का पल्प भारी मात्रा में निकाल रहे हैं और बाजार में उतार रहे हैं. उनके पास इस लघु उद्योग के लिए पर्याप्त जमीन नहीं है फिर भी वह अपने अड़ोस-पड़ोस की जमीन को भी इस काम के लिए इस्तेमाल कर रहा है. जिसके एवज में अमुक काश्तकार को भी नगदी लाभ हो जाता है.

इतना ही नहीं वह तो फलोत्पादन के लिए अब नर्सरी भी तैयार कर रहे हैं. जो उनकी नर्सरी में नया पौधा तैयार होता है उसे वह डेमोस्टेशन के लिए अपने गांव के लोगों को मुफ्त में उपलब्ध करवाते हैं. ताकि इस नगदी फसल से सभी को लाभ हो सके और लोग स्वावलम्बी बनें. ऐसा भरत सिंह राणा बात-बात में कह देते हैं. लगभग दो हजार फीट की ऊंचाई पर स्थित हिमरोल गांव जहां प्राकृतिक सौन्दर्य समेटे है वहीं आज बागवानी में भी यह क्षेत्र अग्रणी हो रहा है. इसका श्रेय लोग भरत सिंह राणा को देते हैं. राणा का ही कमाल है कि कभी हाई एल्टीट्यूट के सेब के पेड़ यहां लोगों ने विकसित किये थे. जो पांच वर्ष बाद ही फल देते थे. लेकिन श्री

राणा ने इसी जगह पर लो-हाईट के सेब की नर्सरी 'स्पर' जैसी नस्ल विकसित की है जिसका लाभ लोग पिछले पांच वर्षों में खूब ले रहे हैं. यह 'स्पर नस्ल' की सेब की प्रजाती तीन वर्ष में ही फल उत्पादन कर देती है. भरत सिंह राणा की सोच इतनी तक सीमित नहीं है वह जिस पानी को अपनी नर्सरी, जूस के पल्प बनाने के लिए प्रयोग करता है उस पानी को भी श्री राणा ने बहुपयोगी बनाया है. अब तो उनके पानी के तालाब में मछली पालन भी हो रहा है. यूं कहें कि प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग यदि सीखना है तो भरत सिंह राणा के पास जाना ही पड़ेगा.

राणा को स्थानीय प्रशासन से लेकर राज्य स्तर तक इस उम्दा कार्य के लिए कई बार सम्मान मिल चुका है. लेकिन बात तब और आगे बढती है जब बाहर के प्रदेश राणा को सम्मानित करते हैं. उनकी काम की गूंज नरेन्द्र मोदी के कान तक गयी तो उन्होंने अपने गुजरात के मुख्यमंत्रीत्वकाल में श्री राणा को गुजरात में हुए राष्ट्रीय किसान सम्मेलन के दौरान 'विशेष किसान' सम्मान से सम्मानित किया था. वर्तमान में राणा की नर्सरी, फल बागान, जूस विकसित केन्द्र, मछली पालन का तालाब सरकारी और गैर सरकारी स्तर पर शोध का केन्द्र बना हुआ है. आस-पास के नव-युवक श्री राणा के कार्य का अनुसरण करते दिखाई दे रहे हैं. ❍

सीमा रावत
प्रबंधक, यमुना वैली
पब्लिक स्कूल, नौगांव

एक कर्मचारी, एक किचन, यहीं से आया स्वरोजगार का विजन

यहां जिक्र ऐसे दाम्पत्य का हो रहा है जिनके पास सरकारी और गैर सरकारी रोजगार का आमंत्रण है. मगर उन्होंने इस आमंत्रण को नजर अंदाज करते हुए वर्ष 2017 में ऐसा सोच लिया था कि वे लोकल-वोकल को ही स्वरोजगार का जरिया बनायेंगे. दरअसल बात हो रही है कोटियाल गांव निवासी ऋचा डोभाल और योगेश बधानी की. जिन्होंने अपनी पुश्तैनी जमीन पर स्थानीय उत्पादों की प्रोसेसिंग के लिए कारखाने का सूत्रपात किया. योगेश और ऋचा इन दिनों पहाड़ का पत्थर-पत्थर नाप रहे हैं. वे पहाड़ की कहावत को पलटने का भरसक प्रयास कर रहे है कि पहाड़ का पानी व जवानी अब यहीं काम आयेगी.

उल्लेखनीय हो कि 'कराग्रे वसते लक्ष्मी करमध्ये सरस्वती, करमूले तू गोविन्द प्रभाते करदर्शनम्'. अर्थात सरस्वती, लक्ष्मी और भगवान वहीं वास करते हैं जहां आप कर्म पर लगातार बने रहते हैं. इस कल्पना को साकार करने का मतलब पहाड़ पर उद्योग की स्थापना करना. उत्तरकाशी के विकासखण्ड नौगांव में स्थित कोटियाल गांव में जब ऋचा ब्याह कर आई तो उसने देखा कि यहां के लोगों की जड़ें खेती किसानी से जुड़ी हुई हैं. बस! मन बनाया और कोटियाल गांव के नजदीक जटा नामक स्थान पर स्थानीय उत्पादों की एक प्रोसेसिंग यूनिट आरम्भ कर दी. ऋचा बताती हैं कि यह यूनिट इतनी असानी से नहीं बनी, बल्कि इसके पीछे एक बड़ा संघर्ष छुपा हुआ है. उनके पति योगेश ने पहले पहल खुद के किचन

से अचार बनाने का काम आरम्भ किया तो परिवार के लोग मजाक समझने लग गए, की क्या पहाड़ में अचार बनाने का काम रोजगार बन सकता है? और हुआ भी ऐसा ही.

अर्थात किचन से बने अचार की मांग बाजार में बढती गई, परन्तु उनके पास न तो कोई व्यवस्थित जगह थी और न ही कोई अन्य संसाधन थे. किसी तरह परिवार के लोगों को विश्वास में लिया और अचार, जूस बनाने के संकल्प को पूरा करने की तैयारी में जुट गए. शर्त यह थी कि पहाड़ के सभी फलों को यूनिट की प्रासेसिंग का हिस्सा बनाया जाए. इस तरह से उन्होंने स्थानीय फलों से 42 प्रकार के अचार, जूस, चटनी, स्क्वैस आदि सामग्री तैयार कर दी.

इधर यमुना नदी के किनारे बसा कोटियाल गांव-नौगांव घाटी का ऐसा सुन्दर स्थान हैं जहां प्राकृतिक छटा बरबस लोगों को यूं ही आमंत्रण देती है. यही नहीं यहां पर नगदी फसल और फलोत्पादन का बड़ा कारोबार है. मण्डी दूर है, यातायात के सीमित साधन हैं. इसे देखते हुए ऋचा डोभाल ने स्थानीय स्तर पर फलों और अन्य नगदी फसल के लिए युवा हिमालय नाम से प्रोसेसिंग यूनिट यानी पूर्ण फैक्ट्री का रूप दिया है. यूनिट की स्थापना के बाद यहां एक तरफ लोगों को स्वरोजगार मिल रहा है और दूसरी तरफ लोगों को उनकी फसल का अच्छा-खास दाम भी मिल रहा है.

ऋचा बताती हैं कि वह पढाई के दौरान से ही कल्पना करती थी कि क्यों न पहाड़ पर ही स्थानीय संसाधनों पर स्वरोजगार के कारोबार आरम्भ कर दिया जाए. ऋचा ने पढाई पूरी करने के बाद कुछ दिनों तक मुख्यधारा की पत्रकारिता की है, उन्हें यह सब रास नहीं आया. उनका सपना था कि अपने पहाड़ को कैसे स्वावलम्बी बनाया जाए. इस बीच वह योगेश बधानी के साथ प्रणयसूत्र में बन्ध गई. योगेश के भी यही सपने थे. ऋचा के पति योगेश भी सीविल सोसायटी की अच्छी खासी पगार छोड़कर दोनों वापस अपने पहाड़ यानी कोटियाल गांव लौट आये.

दो बरस से ऋचा और योगेश अपनी प्रोसेसिंग यूनिट पर रात दिन एक किये हुए है. खूब पसीना बहा रहे हैं. खुद सभी कामों को संभालते हैं. प्रोसेसिंग, पैकजिंग से लेकर मार्केटिंग के काम स्वयं संभालते हैं. यूनिट में काम करनी वाली महिलाऐं भी खुश हैं. उन्हें ऋचा के साथ काम करने में कोई समस्या नहीं होती है. जो काम वे महिलाऐं कर रही हैं उस काम में ऋचा भी उनके साथ हाथ बंटा रही हैं. ऋचा मानती हैं कि पहाड़ पर उद्योग लग सकते हैं, पर पहाड़ के अनुसार. वे अब अपने इस कारोबार को बड़े फलक पर ले जाना चाहती हैं.

गौरतलब है कि एक कर्मचारी और एक छोटे किचन से आरम्भ हुआ ऋचा का यह उद्योग वर्तमान में लगभग 30 लाख रुपए की आमदनी प्रतिवर्ष कर रहा है. साथ ही स्थानीय स्तर पर दो दर्जन से अधिक महिलाओं को स्वरोजगार से जोड़ा है. समाज में जब-

जब हालात नाजुक होते गये तब-तब महिलाओं ने मोर्चा संभाला है. ऐसा ही मोर्चा संभालने की कवायद ऋचा डोभाल ने एक उद्योग के रूप में की है. कह सकते हैं कि पहाड़ पर यह पहला उद्योग है जिसका सफल संचालन ऋचा डोभाल कर रही हैं. वैसे पहाड़ पर उद्योग घाटे का सौदा बताया जाता था, किन्तु ऋचा ने इस धारण को बदल दिया है. वह प्रधानमन्त्री स्वरोजगार योजना का लाभ ले रही हैं. कहना यही होगा कि महिला सशक्तिकरण के लिए ऋचा डोभाल एक मिसाल हैं.

कोटियाल गांव में स्थित इस यूनिट का कारोबार अब विस्तार लेने लग गया है. स्थानीय फल चूलू को भी बाजार में स्क्वैस के रूप में उतारा गया है. यह इस यूनिट का ऐसा काम है जिसकी मांग स्थानीय स्तर पर बढती जा रही है. चूलू को इस क्षेत्र के लोग आमतौर पर फेंक देते थे, पर अब इस यूनिट के माध्यम से चटनी, अचार के साथ-साथ स्क्वैस का स्वाद भी लोग ले रहे हैं. यूनिट में स्थानीय उत्पाद तिमली, दाड़िम, सेमल, सेब पिलखाई, आंवला आदि 42 प्रकार के उत्पदों से अचार, चटनी और जूस बड़ी मात्रा में बनाया जा रहा है. खास बात यह है कि प्रोसेसिंग की गुणवता का भी कोई जबाव नहीं है. ❍

भारती आनंद
उद्घोषिका आकाशवाणी,
देहरादून

पति-पत्नी ने स्वरोजगार से 500 से ज्यादा परिवारों को दिया रोजगार

इसमें कोई संदेह नहीं कि पहाड़ पर पलायन की खबरें पिछले 18 वर्षों से सर्वाधिक बढ़ी हैं. सिर्फ खबरें ही नहीं दरअसल रोजगार की तलाश में पलायन करने वालों की संख्या में भी इजाफा हुआ है. पलायन का कारण और किस तरह का पलायन, स्वैच्छिक पलायन या मजबूरी का पलायन आदि सवाल खड़े हैं. जिसके निवारण की ओर सरकारें लगातार काम कर रही हैं. मगर राज्य बनने के बाद पलायन निरन्तर जारी है. दूसरी तरफ देखें तो कुछ लोग पलायन को कोई समस्या नहीं मान रहे हैं. वे कहते हैं कि इस पहाड़ में वे सभी प्राकृतिक साधन उपलब्ध हैं जिससे स्वरोजगार पाया जा सकता है. दर्जनों युवाओं ने ऐसा ही करके दिखाया है. ज्ञात हो कि प्राकृतिक सौन्दर्य को समेटे और नगदी फसलों के लिए विख्यात उतरकाशी की यमुनाघाटी में एक युवा ने स्थानीय उत्पादों को बाजार में पंहुचाने का नायाब तरीका निकाला है. वह लगभग 550 ऐसे मझौले किसानों से जुड़ा है जो कम से कम एक और अधिक से अधिक 10 कुन्तल अलग-अलग प्रकार की नगदी फसलों का उत्पादन करते हैं. वे किसान अलग-अलग मौसम में उस युवा का इंतजार करते हैं कि उनके गांव में नगदी फसल को खरीदने वाला नरेश कब आयेगा. सच में यह वही नरेश नौटियाल है जो यमुनाघाटी की नगदी फसलों को बाजार और पहचान दिलाने का बादशाह कहलाता है. नौगांव, पुरोला व मोरी विकास खण्डों के काश्ताकार हो या वहां की स्वयं सहायता समूहों की महिलाऐं उन्हें बस नरेश नौटियाल का ही इंतजार रहता है. ताकि उनकी मेहनत का मूल्य उन्हें घर बैठे ही मिल जाए.

पुरोला के गुंदियाट गांव निवासी उच्च शिक्षित कैलाश नौटियाल

कहता है कि जब से वह नरेश से जुड़ा है तब से गांव में ही स्वरोगार पा चुका है. वह गांव में ही लाल चावल एकत्रित करके नरेश को उपलब्ध करवाता है. उनके स्वंय भी लाल चावल होते हैं. अपने उपयोग के बाद जो चावल बच जाते हैं उसे वह नरेश को बेच देते हैं. किम्मी गांव के हरिमोहन का कहना है कि नरेश उन्हें उनके उत्पादों का दाम हर सीजन में उनके घर पंहुचा देता है. इसी गांव की कामनी राणा व सुनीता राणा का कहना है कि जब से उनके स्थानीय उत्पाद बाजार में पंहुचने लगे तब से किसानी करने के तरीकों में भी आमूलचूल परिवर्तन आया है. स्थानीय उत्पादों को बाजार में पंहुचाने का श्रेय भी वे नरेश नौटियाल को ही देते हैं. वे आगे कहती हैं कि इधर स्थानीय उत्पादों ने नगदी फसल का रूप लिया और उधर महिलाओं की आर्थिक स्थिति में भी काफी सुधार आने लग गया है.

यमुनाघाटी के ही नैणी गांव के भगवान सिंह व पीसाऊ गांव के चैन सिंह का कहना है यदि नरेश उनके उत्पादों को नहीं खरीदता तो वे उक्त फसल का उत्पादन ही बन्द कर देते. कहते हैं कि उनके क्षेत्र में तो लोगों ने मंडुवे का उत्पादन लगभग बंद ही कर दिया था. पर

अब पिछले 10 वर्षों से मंडुवे के उत्पादन करने में लोगों की दिलचस्पी इसलिए बढी है कि उनके मंडुवे के उत्पादन से उनके हाथों में नगदी आ रही है. वे किसान इस बात का प्रमाण दे रहे हैं कि जिस भी फसल का वे उत्पादन करते हैं वह सभी विशुद्ध रूप से जैविक हैं. क्योंकि वे अपने खेतों में खाद के इस्तेमाल हेतु अपने ही पालतु पशुओं व भेड़-बकरियों का गोबर डालते हैं. उनका मानना है कि रासायनिक खाद से एक बार फसल का उत्पादन खूब बढ़ जाता है, मगर वह खेत आने वाले समय के लिए बंजर ही हो जाता है. ऐसे उनके क्षेत्र में कई उदाहरण हैं.

उल्लेखनीय हो कि नरेश तो अब उन सीमांत और मझौले किसानों का दुलारा बन गया. वह उन किसानों से 15 प्रकार की राजमा ही खरीदता है. जबकि 60 प्रकार की मोटी दालें और हैं. 15 प्रकार का मतलब समझना थोड़ा कठीन हो सकता है. यहां पहाड़ के गांव में छः प्रकार की ऐसी राजमा है जिसे लोग अपने किचन गार्डन में पैदा करते हैं. उस राजमा की लम्बी-लम्बी बेल होती है. कुछ राजमा को लोग अन्य फसल के साथ खेतों की मेड़ों पर उगाते हैं. इसी प्रकार अन्य मोटी दालें भी हैं. नरेश के अनुसार उसके पास 60 प्रकार की अन्य मोटी दालें हैं जिसे वह उन्हीं किसानों से खरीदते हैं जो विशुद्ध रूप से जैविक खेती करते हैं. इसके अलावा वह अखरोट, जख्या, साबुत मसाले, साबुत हल्दी दाल से बनी हुई बड़ी, दाल की नाल बड़ी, सिलबटे का पीसा हुआ नमक जैसे 150 प्रकार के स्थानीय उत्पादों को नरेश नौटियाल बाजार उपलब्ध करवाता है. इस तरह अनुमान लगाया जा रहा है कि प्रत्यक्ष रूप से कई युवाओं के हाथों नरेश के कारण स्वरोजगार प्राप्त हुआ है.

कह सकते हैं कि अकेले नरेश के इस स्वरोजगार के कारण अप्रत्यक्ष रूप से दस हजार की जनसंख्या लाभाविन्त हो रही है. अर्थात 550 परिवारों को स्थानीय स्तर पर स्वरोजगार से जोड़ा गया है. नरेश से बातचीत करने से मालूम हुआ कि वह इस कार्य को स्वयं के संसाधनों से संचालित कर रहा है. वह कहता है कि यदि उसके पास आर्थिक संकट नहीं होता तो पलायन को वह धत्ता बता देता. कहता है कि उनकी यमुनाघाटी में पलायन की कोई समस्या नहीं है पर राज्य के जिन- जिन जगहों पर पलायन एक बिमारी का रूप ले रही है वहां स्थानीय उत्पादों का उत्पादन करके बाजार खड़ा किया

जा सकता है. बता दें कि यमुनाघाटी स्थित देवसारी गांव में जन्में नरेश नौटियाल का जीवन बड़ा ही जीवट रहा है. वे पढ़ाई के दौरान से ही संघर्ष का पर्याय बन गया था. खुद ही अपने लिए स्कूली संसाधनों को जोड़ना नरेश की दिनचर्या बनी हुई थी. इस तरह नरेश स्थानीय स्तर पर हार्क नाम की संस्था से जुड़ा. जिसके एक्सपोजर ने नरेश को हिम्मत दी और प्रेरित हुआ, कि स्वरोजगार से ही स्थितियां सुधारी जा सकती हैं. आखिर वही हुआ और पिछल 10 वर्षों में नरेश ने यमुनाघाटी व गंगा घाटी के स्थानीय उत्पादनों को बाजार में उतारने के व्यवसाय में महारथ हासिल कर डाली. देशभर में लगने वाली प्रदर्शनियों में नरेश के पहाड़ी उत्पाद अपनी अलग पहचान बना चुके हैं. संसाधनों के अभाव में भी आज नरेश का टर्नओवर लगभग 10 लाख रुपये है.

नरेश कहता है कि वह इस कार्य को कभी भी अकेले अंजाम नहीं दे सकता था, पर उनकी पत्नी उनके साथ उत्पादों की ग्रेडिंग, पैकिंग से लेकर बाजार तक पंहुचाने में कंधा से कंधा मिला कर काम करती हैं. उनका यह भी कहना है कि इस कार्य को विशाल रूप देने के लिए बजट की प्रबल आवश्यकता होती है. फिर भी वह इस बात के लिए खुश हैं कि उनके ही जैसे कुछ युवा इस कार्य को हाथों में लेंगे तो यह कार्य स्वयं ही विशाल होगा. साथ ही उत्पादों की गुणवता भी बनी रहेगी. वे मानते हैं कि छोटे-छोटे समूहों में ही ऐसे कार्यों की गुणवता व विश्वसनीयता बने रहेगी. ❍

अंजली फुलारा
एम.ए., पॉलिटिकल साइंस

नौकरी छोड़ ऐपण को बनाया स्वरोजगार का जरिया

इंस्टाग्राम ने बनाया फेमस

हल्द्वानी की रहने वाली फैशन डिजाइनर अभिलाषा पालीवाल इनदिनों ऐपण को सिल्क की साड़ियों पर उतार, उत्तराखंड की पारंपरिक लोक चित्रकला को आधुनिक फैशन से जोड़ रही हैं. उनकी डिजाइन की हुई ऐपण साड़ियों की देश में ही नहीं, बल्कि विदेशों में भी मांग बढ़ रही है. युवा जनरेशन के बीच ऐपण के रंग में रंगी ये सिल्क साड़ियां खासा पॉपुलर हो रही हैं. अभिलाषा कहती हैं 'पारंपरिक कला को आधुनिक और ट्रेंड फैशन से जोड़ने से ही युवा पीढ़ी का उससे जुड़ाव बढ़ेगा और उनके मन में अपनी संस्कृति और समृद्ध लोक कला के प्रति गहरा लगाव पैदा होगा.

इससे कला और संस्कृति भी प्रमोट होगी. जिस तरह से बिहार की पारंपरिक चित्रकला मधुबनी आज वैश्विक स्तर पर पहचानी जाती है और हर आधुनिक रूपों में हमें देखने को मिलती है, उसी तरह से ऐपण को भी धैली से निकालकर दीवारों, कपड़ों, उत्पादों और भवनों के साथ ही हर आधुनिक क्राफ्ट पर उतारना होगा. तभी कुमाऊं और गढ़वाल की ये प्राचीनतम और शगुन लोक चित्रकला वैश्विक स्तर पर अपनी छाप छोड़ पाएगी.' ये ही वजह है कि अभिलाषा अपने फैशन के हुनर और समझ को ऐपण के खूबसूरत रंगों में डिजाइन कर क्लोथिंग से लेकर पेंटिंग्स व विभिन्न उत्पादों के जरिए दिल्ली, मुंबई, बेंगलुरु, नोएडा ही नहीं, बल्कि न्यूयॉर्क तक पहुंचा रही हैं. वह अपने इस स्वरोजगार के जरिए आत्मनिर्भर हुई हैं.

नौकरी छोड़ शुरू की खुद की कंपनी

अभिलाषा दो से भी ज्यादा सालों से ऐपण को विभिन्न उत्पादों पर रंग रही हैं. पेंटिंग्स से लेकर कॉफी मग, हैंड बैग, नेम प्लेट, वुडन क्राफ्ट और क्लोथिंग तक में ऐपण के खूबसूरत डिजाइन पेश कर रही हैं. उन्होंने अच्छी-खासी नौकरी छोड़कर खुद की कंपनी शुरू की, और अपने फैशन हुनर और अनुभव को अपने उत्पादों और आइडिया पर उतार, अलग-अलग शहरों, राज्यों से लेकर विदेशों तक पहुंचा रही हैं. अभिलाषा कहती हैं, देहरादून से फैशन डिजाइनिंग करने के बाद मैं दिल्ली के एक एक्सपोर्ट हाउस में नौकरी करने लगी. करीब चार साल तक नौकरी की, लेकिन मुझे वो रचनात्मकता नहीं मिल पा रही थी.

भीतर पहले से ही क्रिएटिव और कुछ अलग करने की चाह थी. जब भी दिल्ली हाट व प्रगति मैदान के ट्रेड फेयर जाती, वहां फोक आर्ट को देखकर अपनी लोक कला के ऊपर कुछ करनी की इच्छा होती थी. मैं बहुत गौर से हर राज्यों के फोक आर्ट को देखती. मधुबनी को देखकर अपने सूबे के ऐपण कला के ऊपर कुछ करने का आइडिया आया.

ऐपण को लेकर कुछ करूंगी यह दिमाग में बचपन से ही था. शादी के बाद नौकरी छोड़कर हल्द्वानी आ गई, तो सबसे पहले पेंटिंग्स में ऐपण को उतारना शुरू किया. यह साल 2018 की बात है. धीरे-धीरे पेंटिंग्स को लोगों का अच्छा रिस्पॉन्स मिलने लगा, तो पोस्टर और बैग पर ऐपण करने लगी. फिर जाकर धीरे-धीरे अपनी कंपनी खड़ी की, जिसके जरिए आज मैं अपने उत्पादों को बेच रही हूं.

हिंदू प्रतिकों को डालकर बनाया तोरण

अभिलाषा ने हिंदू प्रतिकों के साथ खूबसूरत तोरण को भी ऐपण डिजाइन में रंगा है. वह कहती हैं 'मैं लोगों को गाड़ियों पर लद्दाख और तिब्बत के तोरण लटकाए हुए देखती थी. ये फ्लैग बहुत मशहूर हैं, तो मुझे लगा कि क्यों न हिंदू प्रतिकों के साथ प्राचीनतम ऐपण कला का इस्तेमाल करते हुए अलग तरह के तोरण बनाए जाए, जो उत्तराखंड के युवाओं को लुभा सकें. मेरे बनाए दो तोरण काफी लोकप्रिय हुए और इनकी डिमांड भी काफी रही.

मैंने अपने तोरण में लाल और सफेद रंग का इस्तेमाल करते हुए हिंदू सिंबल डाले और डिजाइनिंग की. ओम, स्वास्तिक और नमः शिवाय वाले तोरण काफी पसंद किए गए. मैं अब नीम करोरी बाबा के ऊपर तोरण बना रही हूं. जिसमें बाबा जी, हनुमान जी और राम जी विराजमान होंगे.

ईजा और आमा से सीखा ऐपण बनाना

अभिलाषा कहती हैं, ऐपण बनाना मैंने अपनी ईजा और आमा से सीखा. मैं छह साल की उम्र से ही ऐपण बना रही हूं. बचपन से ही ऐपण कला के प्रति मेरे मन में गहरा लगाव रहा है. गांव में त्योहारों और शुभ कार्य के अवसर पर ऐपण बनाती थी. पहले पहाड़ों में हर लड़की ऐपण बनाती थी. छुटपन से ही ऐपण बनाना आ जाता था. लेकिन अब चीजें धीरे-धीरे बदल रही हैं और परंपरागत ऐपण की जगह मार्केट से खरीदे हुए ऐपण लाए जा रहे हैं. ट्रेंड चेंज हो गया है.

ऐपण ही क्यों चुना के सवाल पर अभिलाषा कहती हैं 'मैं पहाड़ी हूं. ऐपण मेरी पहचान है. मेरी संस्कृति की पहचान है. हमारे यहां हर शगुन में ऐपण बनाए जाते हैं. ऐपण के बिना शुभ कार्य को अधूरा माना जाता है. उनका कहना है कि उत्तराखंड में ऐपण को लेकर कई अन्य लोग भी बहुत अच्छा काम कर रहे हैं. सबके कार्यों से ही पहाड़ की यह विलुप्त होती लोक कला युवाओं के बीच लोकप्रिय हो रही है और ऐपण कला वैश्विक फलक पर धीरे-धीरे अपनी सशक्त पहचान बना रही है. अभिलाषा कहती हैं कि उनको इंस्टाग्राम के जरिए ही शुरुआती प्लेटफॉर्म मिला. इस सोशल प्लेटफॉर्म के जरिए उनकी डिमांड बढ़ी और लोगों की सराहना भी मिली. बहुत-से लोगों को वह ऑनलाइन ऐपण डिजाइनिंग की कक्षाएं भी दे रही हैं. ❍

प्रियंका, शोधार्थी

नौकरी छोड़ होमस्टे चला रहा इंजीनियर

होमस्टे में लोग डेस्टिनेशन वेडिंग, बर्थडे सेलिब्रेशन और फेयरवेल पार्टी के साथ ही हवन के लिए भी आने लगे हैं . कई जोड़े डेस्टिनेशन वेडिंग के लिए शांत, खूबसूरत वादियों से घिरा और प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर होमस्टे खोजते हैं . ऐसे में यंगस्टर्स के बीच डेस्टिनेशन वेडिंग के लिए होमस्टे जाना नया चलन बन रहा है . लोग पार्टी और पारिवारिक समारोह के लिए भी होमस्टे आते हैं .

अभिषेक सिंह पेशे से इंजीनियर है. पौड़ी-देहरादून रूट पर होमस्टे चलाते हैं. उनका कहना है कि मेरा उद्देश्य एग्रो-टूरिज्म को बढ़ावा देना है. जिसके जरिए मैं आस-पास के ग्रामीणों के लिए भी रोजगार सृजन कर सकूं. अभी मेरे पास चार स्थाई कर्मचारी हैं. गर्मियों के सीजन में जैसे ही होमस्टे का कारोबार बढ़ता है, मैं आस-पास के गांवों के लोगों को भी इससे जोड़ लेता हूं, ताकि उनकी भी कमाई हो सकें. होमस्टे में आने वाले ज्यादातर टूरिस्ट कैंपिंग का मजा लेना चाहते हैं. उनके लिए पहाड़ पर बना होमस्टे किसी आश्चर्य से कम नहीं होता है.

अभिषेक कहते हैं, मैं 2016 से ही स्वरोजगार कर रहा हूं. सबसे पहले डेयरी खोली. लेकिन लोगों का अच्छा रिस्पॉन्स नहीं मिला, क्योंकि पैकेट बंद दूध खरीदने की आदत के चलते लोग इसे गोशाला कहते थे. धीरे-धीरे मैंने इसका विस्तार करके इसे होमस्टे में तब्दील कर दिया. अब तमाम राज्यों से लोग हमारे होमस्टे आते हैं और अपना फीडबैक साझा करते हैं. हमारे होमस्टे को अच्छा रिस्पॉन्स मिल रहा है और सोशल मीडिया के जरिए भी लोग हमसे जुड़ रहे हैं. अभिषेक होमस्टे के साथ ही आजीविका के लिए मुर्गीपालन और मछलीपालन का काम भी करता हूं. जिसकी स्थानीय बाजार में अच्छी-खासी मांग है.

सोशल मीडिया को बनाया प्रचार का जरिया

अभिषेक कहते हैं कि उन्होंने होमस्टे की पब्लिसिटी के लिए

सोशल मीडिया का सहारा लिया. सोशल मीडिया के जरिए होमस्टे के बारे में ज्यादा से ज्यादा लोगों को बताया और लोग उनसे कनेक्ट भी हुए. इंस्टाग्राम और फेसबुक पेज के जरिए कई लोग हमसे जुड़े. होमस्टे में आने वाले टूरिस्ट प्रकृति का आनंद लेने के साथ ही शौक से फोटोग्राफी भी करते हैं और हमारे पेज को टैग करते हुए अपने-अपने सोशल मीडिया पर अपलोड करते हैं. इससे अन्य

लोगों को भी हमारे होमस्टे के बारे में जानकारी मिलती है.

वह कहते हैं, सोशल मीडिया के दौर में सबसे आसान यही है कि एक फोटो आपके लिए कई ग्राहक ला सकती है. अभिषेक कहते हैं कि आप ग्राहकों को जितनी अच्छी सुविधा और आराम देंगे, वह उतना ही आपकी पब्लिसिटी करेंगे. आपके बारे में सोशल मीडिया पर लिखेंगे जिससे न सिर्फ आपकी विश्वसनियता बढ़ेगी बल्कि कई अन्य लोग भी आपके होमस्टे आना चाहेंगे. होमस्टे का यही नियम है- सुंदर बनाइये, फोटो खींचने दीजिए और लोगों को आरामदायक सुविधा दीजिए.

डेस्टिनेशन वेडिंग और बर्थडे सेलिब्रेशन के लिए भी आते हैं लोग

अभिषेक कहते हैं कि होमस्टे में लोग डेस्टिनेशन वेडिंग, बर्थडे सेलिब्रेशन और फेयरवेल पार्टी के साथ ही हवन के लिए भी आने लगे हैं. कई जोड़े डेस्टिनेशन वेडिंग के लिए शांत, खूबसूरत वादियों से घिरा और प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर होमस्टे खोजते हैं. ऐसे में यंगस्टर्स के बीच डेस्टिनेशन वेडिंग के लिए होमस्टे जाना नया चलन बन रहा है. लोग पार्टी और पारिवारिक समारोह के लिए भी होमस्टे आते हैं. अभिषेक कहते हैं कि उन्होंने बांस के हट्स पंडित दीन दयाल उपाध्याय योजना के अंतर्गत बनवाए हैं. उन्होंने यह कोशिश की है कि उनका होमस्टे टेंट जैसा फील दें, क्योंकि

अधिकतर लोग होमस्टे में कैंपिंग का मजा लेना चाहते हैं. उनकी प्राथमिकता ऐसी जगह होती है, जहां हट्स व टेंट्स हों.

अभिषेक बताते हैं कि होमस्टे का मतलब ही यह है कि आप घर से कहीं दूर हों मगर घर जैसा महसूस करें . प्रकृति के बीच बना हमारा होमस्टे लोगों को घर जैसा फील देता है और मेजबानी भी अच्छे से होती है. हम साफ-सुथरा पौष्टिक ऑर्गेनिक भोजन देते हैं और कमरे साफ, बिस्तर मुलायम और ग्राहकों की सुविधाओं का पूरा ख्याल रखते हैं.

पहले खुद बनाये गोबर से दीये अब महिलाओं को रही हैं सीखा

बबीता नेगी सतपाली गांव के एकेश्वर ब्लॉक में रहती हैं. उन्होंने खेती और गृहस्थी से इतर गोबर के दीये को स्वरोजगर का जरिया बनाया है. जिसके लिए उनकी खूब सराहना भी हुई. बबीता बताती हैं कि उन्होंने 'जै बजरंग' स्वयं सहायता समूह की स्थापना कर गांव की महिलाओं को गोबर के दीये बनाना सीखाया. गोबर के दीये बनाने की ट्रेनिंग नीलम नीलकंठ दीदी से ली. जिसके बाद खुद ही दीये बनाने और बेचने लगे.

बबीता बताती हैं कि नीलम नीलकंठ दीदी ने ट्रेनिंग की कोई फीस नहीं ली. आधार कार्ड और फोटो सहित कुछ कागजात लिए ताकि रिकॉर्ड रह सके. वह बताती हैं कि गोबर के दीये बहुत मजबूत होते हैं.ये नीचे गिरने से टूटते नहीं हैं. अगर इन्हें दोबारा उपयोग में न लाना हो, तो खेत या पेड़-पौधों की जड़ पर खाद के तौर पर डाला जा सकता है. पर्यावरण की दृष्टि से भी गोबर के दीये अच्छे होते हैं. इन्हें बनाने के लिए आपको बाजार से कुछ नहीं खरीदना पड़ता है.

बेहद आसान है गोबर का दीया बनाना

बबीता कहती हैं,गोबर का दीया बनाना बेहद आसान है. इसके लिए एक साल पुराना गोबर चाहिए. साथ ही थोड़ा कच्चा/ताजा गोबर भी लेना पड़ता है, ताकि शेप देने में आसानी हो सकें. पुराने गोबर को महीन छानना पड़ता है,

जिसके बाद दोनों को अच्छे से मिलाकर सानना होता है. बबीता कहती हैं कि यह काम बहुत मेहनत का है और इसमें हाथ थक जाते हैं. जब गोबर अच्छे से मिल जाए, तो शेप देकर सुखाना होता है.

वह कहती हैं, अभी हमारे पास चार ही सांचे हैं. जिसके जरिए हम दीवाली पर दीये बनाते हैं और लोग इनको काफी पसंद भी करते हैं और खदीदते भी हैं. बबीता बताती हैं कि उनकी मेहनत की बदौलत अब बीड़ीओ ने उन्हें ब्लॉक में अन्य महिलाओं को प्रशिक्षण देने के लिए बुलाया है.

– **प्रियंका,** शोधार्थी

डेकोरेटिव प्रोडक्ट्स बनाकर घर ही नहीं, गांव भी संवारा

गुंजन पौड़ी जिले के डांग गांव की रहवासी हैं. पति अनुज रावत मुर्गीपालन का काम करते हैं. गुंजन ने गृहिणी होते हुए आर्थिक तौर पर आत्मनिर्भर बनने के लिए होम डेकोरेटिव प्रोडक्ट्स को स्वरोजगार का जरिया बनाया है. वह घर सजाने की चीजें बनाती हैं और लोगों को बेचती हैं. गुंजन टैडी, शीशा, मोबाइल केस, झूला, चाबी केस और धागों की गांठों से झालर आदि होम डेकोर की चीजें बनाती हैं.

वह कहती हैं कि कॉलेज के दिनों में टैडी के प्रति आकर्षित होने की वजह से मैंने कपड़े और रूई की टैडी बनाना शुरू किया। इसके बाद कई तरह की सजावटी चीजें बनाने और बेचने लग गई, ताकि आत्मनिर्भर बन सकूं.

गांव की अन्य महिलाओं को भी दी ट्रेनिंग

गुंजन कहती हैं, वह गांव की अन्य महिलाओं व लड़कियों को भी होम डेकोर की चीजें बनाना सीखाता हैं. उनसे ट्रेनिंग लेकर कई महिलाएं आत्मनिर्भर हुई हैं और घर की साज-सजावट की चीजें बनाकर अपना घर भी सजा रही हैं और लोगों को बेचकर अपनी आजीविका भी चला रही हैं. गुंजन बताती हैं कि उन्होंने श्रीनगर से होम डेकोर की कुछ चीजें सीखीं और उसके बाद उनको बनाना शुरू किया व साथ ही में कई लड़कियों को भी सिखाया. उन्होंने बताया, हम होम डेकोर का सामान ऋषिकेश से मंगवाते हैं और उसके बाद घर की सजावट की चीजें बनाते हैं. इसके अलावा,सर्दियों के मौसम के लिए गर्म स्वेटर भी बुनते हैं और उनके बेचते हैं. वह कहती हैं, महिलाएं घर की सजावट की चीजें बनाकर भी आत्मनिर्भर बन सकती हैं.

– **प्रियंका,** शोधार्थी

डॉ. प्रकाश उप्रेती
prakasaupretti@gmail.com

पांच महिलाओं ने रखी समूह की नींव

'खोपड़ा ग्राम महिला स्वयं सहायता समूह' स्वरोजगार के साथ ही सामूहिकता की बिखरी कड़ियों को भी जोड़ने में बड़ी भूमिका निभा रहा है. ईजा इसके बारे में बताते हुए बहुत खुश रहती हैं. हर मीटिंग के बाद बताती हैं– 'च्यला आजक हिसाब लिख म्यु'

पहाड़ हमेशा आत्मनिर्भर रहे हैं. पहाड़ों के जीवन में निर्भरता का अर्थ सह-अस्तित्व है. यह सह-अस्तित्व का संबंध उन संसाधनों के साथ है जो पहाड़ी जीवनचर्या के अपरिहार्य अंग हैं. इनमें जंगल, जमीन, जल, जानवर और जीवन का कठोर परिश्रम शामिल है. इधर अब गांव में कई तरह की योजनाओं के जरिए पहाड़ अपनी मेहनत से नई करवट ले रहा है. इस करवट की एक आहट आपको खोपड़ा गांव में दिखाई देगी.

पिछले साल गांव में 'महिला स्वयं सहायता समूह' की स्थापना हुई. यह विचार ग्राम पंचायत की तरफ से एक मीटिंग में रखा गया था. ईजा उस मीटिंग में गई हुई थीं. ईजा बताती हैं कि- 'उस मीटिंग में हमारी 'पधानी' के अलावा दो महिलाएं अल्मोड़ा से आई हुई थीं'. हमारी ग्राम पंचायत में 4 गांव आते हैं. हर गांव से महिलाएं आई हुई थीं. कहीं से चार, कहीं से दस और कहीं से तीन ही. हमारे गांव से दो लोग गए थे. हमारा गांव, ग्राम सभा के अन्य गांवों के मुकाबले छोटा है. गिनती के 12 परिवारों का घर है. उसमें से भी 7 परिवार गांव में रहते हैं. इस हिसाब से 2 लोगों की उपस्थिति भी ठीक ही कही जा सकती है.

उस दिन मीटिंग में आने के बाद ईजा ने बताया कि - च्यला, जो दो महिलाएं बाहर से आई थीं उन्होंने सबको 'महिला स्वयं सहायता समूह' के बारे में बताया. यह भी बताया कि इसके जरिए कैसे गांव के स्तर पर आत्मनिर्भर बना

जा सकता है. बता रहे थे कि तुम क्या-क्या कर सकते हो. कैसे स्वयं रोजगार पैदा कर सकते हो, खुद की साग-सब्जी लायक पैसा कमा सकते हो. इसमें सरकार भी तुम्हारी मदद करेगी. ये सारी बातें उन दोनों महिलाओं ने बताई थीं.

उसके बाद हमारी पधानी ने चारों गांवों की महिलाओं को ये जिम्मेदारी दे दी कि वो अपने गांव की महिलाओं से बात करेंगी और एक समूह बनाएंगी. जब समूह बन जाएगा तो

फिर मैं आऊंगी और उसे कैसे चलाना है वो बताऊंगी. ईजा को पधानी ने कहा कि दीदी आप ही पहले अपने गांव में शुरू कीजिए. मैं कल ही आपके गांव में आऊंगी.

इसके बाद मीटिंग खत्म हो गई. सब लोग अपने-अपने गांव के लिए चले गए. ईजा ने गांव में आकर दोपहर में सबको बता दिया. सब लोग राजी भी हो गए. शाम को फोन पर पधानी को भी बता दिया कि आप कल शाम को 3 बजे आ जाओ. अगले दिन पधानी नीयत समय पर गांव में पहुंच गईं. मीटिंग हमारे घर पर ही हुई. उस दिन ईजा समेत गांव की 4 और महिलाओं ने मिलकर 'खोपड़ा ग्राम महिला स्वयं सहायता समूह' की नींव रख दी. ईजा को सबकी सहमति से कोषाध्यक्ष बना दिया गया ताकि पैसे का हिसाब-किताब ईजा देखे.

इसके तहत सप्ताह में एक मीटिंग होती है. यह मीटिंग बारी-बारी से सबके घर में होती है. इसमें सब लोग 10-10 रुपए जमा करते हैं. इस तरह से महीने में एक जना 40 रुपए और सबका मिलाकर 200 रुपए इकट्ठा हो जाते हैं. ईजा ने बहन की मदद से इसके हिसाब-किताब का एक रजिस्टर बना रखा है. उसमें हर मीटिंग की मुख्य बातें और पैसे दर्ज होते हैं.

मीटिंग के बाद यह तय हुआ कि इन पैसों से हल्दी और अदरक लाया जाएगा और उसके जरिए ही खोपड़ा ग्राम स्वयं सहायता समूह रोजगार पैदा करेगा. कुछ लोगों ने मोमबत्ती बनाने को लेकर सोचा है. कुछ लोग इसकी ट्रेनिंग करने के लिए जाने वाले भी थे लेकिन इस लॉक डाउन के कारण जा नहीं पाए. धीरे-धीरे 5 लोगों का यह समूह गति पकड़ने लगा है. ईजा पूरी मेहनत के साथ इसमें लगी हुई हैं. उद्यमिता उनके अंदर है. सब लोग मिलकर समूह को उसके लक्ष्य तक पहुंचाने के पहले पड़ाव को पार कर चुके हैं.

जनवरी 2020 में समूह का बैंक एकाउंट भी खोल दिया गया है. उसमें सारे पैसे जमा करवा दिए गए हैं. साथ ही 10 हजार रुपए सरकार की तरफ से भी सहायता मिलने का आश्वासन है. वो भी मिल जाएंगे. आस-पास के गांवों के महिला स्वयं सहायता समूह वालों को मिल गए हैं.

इस तरह एक समूह अस्तित्व में आया. ईजा और गांव की अन्य महिलाओं के प्रयासों से वो होने जा रहा है जिसकी कुछ वर्ष पहले तक कल्पना भी नहीं की जा सकती थी. यह समूह स्वरोजगार के साथ ही सामूहिकता की बिखरी कड़ियों को भी जोड़ने में बड़ी भूमिका निभा रहा है. ईजा इसके बारे में बताते हुए बहुत खुश रहती हैं. हर मीटिंग के बाद बताती हैं- 'च्यला आजक हिसाब लिख म्यु' (बेटा आज का हिसाब लिख रही हूं). ❍

शशि मोहन रवांल्टा
एसोसिएट आर्ट डायरेक्टर
पाञ्चजन्य एवं आर्गेनाइजर, नई दिल्ली

संघर्ष और मेहनत की बदौलत दिल्ली में सफल उद्यमी बना पहाड़ का बेटा

उत्तराखंड के जगमोहन बिजल्वाण दिल्ली में एक सफल उद्यमी हैं. अपने उत्साह, संघर्ष और कारोबारी सोच की बदौलत उन्होंने खुद का सफल बिजनेस खड़ा किया. वह कहते हैं कि एक सफल कारोबार के लिए सबसे अहम है- जीवन में जोखिम लेना और बाधाओं से बिल्कुल भी नहीं घबराना. अक्सर उद्यमी सोच के युवा भी आराम दायक नौकरी और भविष्य को सुरक्षित करने के चक्कर में अपनी रचनात्मकता और कारोबारी प्रतिभा को मार लेते हैं, जबकि होना इसके उलट चाहिए. युवाओं को अपनी प्रतिभा का उपयोग स्वरोजगार के लिए करना चाहिए, क्योंकि हम जिस वक्त में रह रहे हैं यह उद्यमशीलता का वक्त है. जो युवा जोखिम उठाते हैं, उनको सफलता जरूर मिलती है.

कंपनी सेक्रेटरी की नौकरी छोड़ खड़ा किया बिजनेस

जगमोहन बताते हैं कि वह एक बड़ी कंपनी में कंपनी सेक्रेटरी लीगल हेड के पद पर थे. सैलरी और सुविधा सब बहुत अच्छी थी, लेकिन मन में संतुष्टि नहीं थी. हर वक्त लगता था कि अपना कुछ करना चाहिए. जब पत्नी के साथ यह बात साझा की तो उनका भरपूर सहयोग मिला और वह भी कंपनी सेक्रेटरी की नौकरी छोड़ व्यवसाय खड़ा करने में साथ आ गईं. इस तरह कारोबार की शुरुआत हुई. पहले एफएमसीजी उत्पादों को बेचा, लेकिन फिर लगा कि मैं जहां से आता हूं वहां हर्बल का बेहद महत्व है और हर्बल को ही क्यों न कारोबार के लिए चुना जाए, ताकि भविष्य में अपने क्षेत्र के लोगों और उनके स्थानीय उत्पादों के लिए भी कुछ किया जा सके. वैसे भी तमाम बड़ी कंपनियां हर्बल नेचुरल उत्पादों को बेहद महंगे दामों पर बेचती हैं, ऐसे में आम आदमी सोचता है कि हम इन उत्पादों को नहीं खरीद सकते. जबकि, ऐसा नहीं है. ग्राहक कम दाम में भी अच्छी गुणवत्ता वाले हर्बल नेचुरल उत्पादों को खरीद सकता है और उनका उपयोग कर सकता है. इसके साथ ही हर्बल नेचुरल प्रोडक्ट्स के साथ है यह भी है कि अगर आप अच्छी क्वालिटी नहीं देंगे, तो आपको कस्टमर्स का सपोर्ट नहीं मिलेगा. इसलिए, हमने सोचा कि अच्छी क्वालिटी पॉकेट फ्रेंडली दाम में देंगे, ताकि सामान्य उत्पाद और ऑर्गेनिक के बीच दामों के इस लंबे गैप को कम किया जा सकें.

आप खुद देख सकते हैं कि हमारे पहाड़ में जो हर्ब ऐसे ही जंगलों में पाए जाते

हैं, बड़ी कंपनियां किस तरह से उसे ई-कॉमर्स साइट्स पर ऊंचे दामों में बेचती हैं. इस वक्त हम अच्छी क्वालिटी के तमाम नेचुरल हर्बल ब्यूटी प्रोडक्ट्स आठ से भी ज्यादा राज्यों में सफलता के साथ बेच रहे हैं. जिनमें 'हर्बल लिप बाम' से लेकर 'मॉइस्चराइजर क्रीम' और 'फेस वॉश' तक शामिल है.

जगमोहन कहते हैं 'मैं संघर्षों से निकला हुआ व्यक्ति हूं जिसने सीमित संसाधनों के साथ पहाड़ से लेकर दिल्ली तक की दूरी तय की. नवोदय विद्यालय से बारहवीं तक की पढ़ाई के बाद दिल्ली आ गया और यहां दिल्ली विश्वविद्यालय से बीकॉम व एलएलबी और फिर एमकॉम और उसके बाद सीएस कर नौकरी करने लगा. ल्यूमैक्स, जेएचएस और एनटीपीसी के ज्वॉइंट वेंचर जैसी बड़ी कंपनियों में काम किया और सीएस लीगल हेड रहा. मैं शुरुआत से ही ज्यादा मनी माइंडेड नहीं था, हमेशा ऐसा कुछ करना चाहता था जो स्वयं का हो, अपना हो. इसलिए, पत्नी के सहयोग और अपने नॉलेज एवं टैलेंट के बल पर जोखिम लेते हुए अपनी कंपनी खड़ी कर डाली. रिसॉर्स की कमी हुई. बाधाएं भी आई, लेकिन हमने डिसाइड कर रखा था जो भी हो जाए करना खुद का बिजनेस ही है.'

कोरोना की वजह से दिक्कत जरूर हुई पर हौंसला नहीं टूटा

जगमोहन कहते हैं 'कोरोना की मार तो सभी पर पड़ी है. क्या

व्यापारी क्या नौकरीपेशा? कोरोना से पहले हमारा प्रोडक्ट्स आठ राज्यों में पहुंच चुका था. बाकी राज्यों में भी विस्तार की पूरी योजना बन गई थी, लेकिन कोरोना की वजह से वह प्लानिंग थोड़ा पीछे चली गई. इस वक्त हमारे उत्पाद सबसे ज्यादा दिल्ली, यूपी, राजस्थान, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, बिहार और झारखंड में उपस्थिति दर्ज कराए हुए हैं. इतना जरूर कहूंगा कि अगर कोरोना नहीं आया होता, तो मेरे पिछले बैलेंस सीट से इस साल की बैलेंस शीट पांच गुना ज्यादा होती.

जगमोहन की कंपनी का वार्षिक टर्नओवर करोड़ों में है. वह कहते हैं 'यदि कोई भी व्यक्ति हमारे साथ जुड़कर स्वरोजगार अपनाना चाहता है, तो वह थोड़ी-सी पूंजी के साथ हमारे साथ जुड़ सकता है.' उनका कहना है कि अगर आदमी के अंदर टैलेंट है और उसे महसूस होता है कि कुछ करना चाहिए, तो हिचक, डर और असुरक्षा को बाहर निकालकर नये कार्य में जुट जाना चाहिए. मैंने जब अपना कोरोबार शुरू किया था उस वक्त मेरे पास 60 लाख रुपये का होम लोन था. लेकिन मुझे भरोसा था कि मैं कर लूंगा. इसी भरोसे की बदौलत आज हम सफल कारोबारी हैं. ❍

मंजू काला, ब्लॉगर

खतरे में है मिठास

मधुमक्खी में 170 प्रकार की रासायनिक गंध को पहचानने की क्षमता होती है. इसकी खासियत यह है कि यह 6 से 15 मील प्रति घंटे की रफ्तार से उड़ती हैं. जिस तरह से वन घट रहे हैं उसका प्रभाव मधुमक्खियों पर भी पड़ा है. उनकी संख्या में निरंतर गिरावट आ रही है.

मधुमक्खियां न केवल पौष्टिक शहद देती हैं, बल्कि हिमालय की जैव विविधता और पर्यावरण संतुलन में भी इनकी अहम भूमिका रहती है. लेकिन अब कीटनाशकों के अंधाधुंध इस्तेमाल और जंगलों की आग ने मधुमक्खियों के जीवन के लिए संकट खड़ा कर डाला है. इसका शहद उत्पादन पर भी बुरा असर पड़ रहा है. हालात यह है कि एक समय पहाड़ में जहां 10 कुंतल शहद का उत्पादन होता था, वहां आज बड़ी मुश्किल से एक कुंतल शहद ही मिल पा रहा है. पलायन का भी शहद उत्पादन पर बड़ा असर पड़ा है!

कभी कीटनाशक रसायन, कभी आसमानी ओले तो कभी भोजन की कमी के चलते मधुमक्खियों का जीवन संकट में है. इनके असमय दम तोड़ने के चलते सर्वाधिक प्रभाव शहद उत्पादन पर पड़ रहा है. सरकारी आंकड़ों के मुताबिक इस समय प्रदेश में 1600 मीट्रिक टन शहद का उत्पादन हो रहा है. लेकिन अब ग्रामीण क्षेत्रों से पलायन एवं मधुमक्खियों की असमय मौत के चलते इसमें भारी गिरावट आ रही है. मौन उत्पादन से जुड़े काश्तकार धीरे-धीरे इस व्यवसाय को छोड़ रहे हैं तो शहद उत्पादन संबधी सरकारी कार्यक्रम कागजों से जमीन पर नहीं उतर पाता.

फूल जो मधुमक्खी के आहार का मुख्य स्रोत है उसमें फैलते रसायनिक कीटनाशकों के जहर से मधुमक्खियां लगातार मर रही हैं. जंगलों में लगने वाली आग भी इनके मौत का कारण बन रही है. वर्षाकाल में तो इनके लिए भोजन जुटा पाना भी मुश्किल हो जाता है! जून से अगस्त माह के तीन महीनों में प्राकृतिक फूलों की कमी के चलते इन्हें अपना आहार जुटाने में मुश्किल आती है. इन दिनों मुधमक्खी पालक इन्हें भोजन के तौर पर चीनी उपलब्ध कराते हैं, लेकिन चीनी इतनी महंगी है कि इसे आदमी खाये या मधुमक्खियों को खिलाए?

नाशपाती, लीची, आम, सेब, अमरूद आदि के फूलों के साथ ही गुलाब और अन्य फूलों की प्रजातियों में भी भारी कमी आने से मधुमक्खियों को भोजन जुटाने में कठिनाई होती है. आहार न मिलने से ये असमय दम तोड़ जाती हैं. ऐसे में मधुमक्खी पालकों के समक्ष बड़ी समस्या यह पैदा हो रही है कि वह इनका भोजन कहां से लाएं?

दूसरी तरफ विशेषज्ञों का कहना है कि पर्यावरणीय असंतुलन के चलते फूलों से निकलने वाला नेक्टर मीठा द्रव्य

कम हो रहा है जिसके चलते फलों में पर्याप्त पराग पैदा नहीं हो पा रहा है. पराग में नेक्टर कम बनने से मधुमक्खियों को शहद के लिए जरूरी शुगर नहीं मिल पा रहा है जिसके चलते शहद के उत्पादन में कमी आ रही है. विशेषज्ञ अच्छे पराग के लिए समय पर वर्षा और उचित तापमान को जरूरी बताते हैं, लेकिन जलवायु परिवर्तन इसमें बाधा बना हुआ है. मधुमक्खियों के दुश्मनों की संख्या में वृद्धि भी एक बड़ी वजह मानी जा रही है. भालू, किंग क्रो, बी हाईपर एवं अंगलार मधुमखियों को अपना भोजन बना रहे हैं. इसके अलावा पहाड़ों में मौन पालन का वैज्ञानिक ढंग से न किया जाना भी शहद उत्पादन को प्रभावित कर रहा है.

वनों में मधुमक्खियां वृक्षों के ऊपर छत्ते बनाती हैं. इनके परागण से फूल, फल एवं बीज बनते हैं. विशेषज्ञ मानते हैं कि वनों में जितना अधिक परागण होगा उतनी ही अधिक जैव विविधता बढ़ती है. सर्वाधिक परागण मधुमक्खियों द्वारा ही होता है. यह भी माना गया है कि उच्च हिमालयी क्षेत्र में परागणकर्ता की कमी के कारण कई दुर्लभ वनस्पतियां विलुप्ति के कगार पर हैं. जैव विविधता के लिए मधुमक्खियों का संरक्षण जरूरी माना गया है. वनों की जीवन प्रणाली को भी सुदृढ़ करने के लिए इनकी अधिकतम संख्या होनी चाहिए.

कुमाऊं में तो लगभग हर जिला मौन उत्पादन के लिए प्रसिद्ध रहा है. हर गांव में हर घर में मधुमक्खियों के छत्ते होते थे. लोग अपनी आवश्यकताओं के पूर्ति के बाद इसका विक्रय करते थे. पहले पहाड़ों के हर घर में मौनों के लिए अलग से डिब्बा लगता था शायद ही कोई घर हो जहां पर मौन पालन न होता हो. लोग अपनी जरूरत का शहद उत्पादन कर लेते थे. लेकिन आज वे अपनी आवश्यकताओं के लिए भी बाजार पर आश्रित हैं. आज पहाड़ी शहद मिल पाना मुश्किल हो रहा है. जनपद पिथौरागढ़ के गुरना क्षेत्र जहां पर्याप्त मात्रा में शहद उत्पादन होता था वहां 90 प्रतिशत उत्पादन घटा है.

इसकी वजह खेती एवं उद्यान में कीटनाशकों का प्रयोग माना जा रहा है. यहां के 30 से अधिक गांवों में शहद उत्पादन होता है.

पहाड़ में शहद का उत्पादन तेजी से घट रहा है. एक समय यहां पर 10 कुंतल तक शहद का उत्पादन होता था जो अब एक कुंतल तक पहुंच गया है. यही हाल पिथौरागढ़ जनपद के नेपाल सीमा से लगे गांवों का भी है. 300 से अधिक परिवारों ने मौन पालन का काम छोड़ दिया है. जिले में 400 परिवार मौन पालन से जुड़े हैं लेकिन अब इनका रुझान इस ओर कम हो रहा है. जनपद के गुरना, डाकुडा, जमराड़ी, जाड़ापानी, बेड़ा, गोगिना, हिमतड़, बलुवाकोट, परम, जम्कू, सिर्खा, सिर्दांग, किमखोला, बौना, तामिक, गौल्फा, नामिक, कूटा, अस्कोट, पनार आदि क्षेत्र में जमकर उत्पादन होता था. जिले के धारचूला के नारायण आश्रम, बलुवाकोट, पैयापोड़ी, जम्कू, गोरीछाल, तोमिक, गर्खा, जमतड़ी, भटेड़ी, गोगिना, बड़ालू, गोरीछाल, तल्लाबगड़ गोगिना, झूलाघाट, थली आदि में व्यापक मात्र में शहद का उत्पादन होता था. जौलीजीवी मेले

में यहां का शहद खूब बिकता था. राज्य गठन के समय जिले में शहद उत्पादन करीब 2000 कुंतल था जो अब गिरकर 700 कुंतल तक पहुंच गया है. पड़ोसी जनपद चंपावत हो या फिर अल्मोड़ा, बागेश्वर, नैनीताल हर जगह जमकर शहद उत्पादन होता था. लेकिन पर्याप्त संरक्षण न मिलने से मौन पालक अब इस व्यवसाय को छोड़ रहे हैं.

उद्यान विभाग की तमाम कोशिशें भी मौन पालन को स्वरोजगार का जरिया नहीं बना पाई. कहने को तो उद्यान विभाग समय-समय पर मौन पालन का प्रशिक्षण देता है. मौन बॉक्स, जाली, मोम सीट, दस्ताने, मुंह रक्षक जाली, स्वार्म बैग, क्वीन गेट आदि वस्तुएं भी निःशुल्क उपलब्ध करायी जाती हैं लेकिन इसके बाद भी मौन पालन की तरफ लोगों का रुझान कम ही है.

उद्यान विशेषज्ञों के अनुसार कीटनाशकों के प्रयोग से मधुमक्खियों की मौत हो रही है. फूलों से मधुमक्खियां अपना आहार लेती हैं. किसान फूलों पर कीटनाशकों का प्रयोग कर रहे हैं जिसकी कीमत मधुमक्खियों को चुकानी पड़ रही है. कीटनाशक रसायन से मौनों को पहुंच रही हानि पर सरकार का कहना है कि वह ऐसे रसायन खरीदेगी जिससे नुकसान नहीं के बराबर हो. वहीं मंडी परिषद के माध्यम से जैविक शहद खरीदा जाएगा. सरकार की ये घोषणाएं कब अमल में उतरेंगी यह तो पता नहीं लेकिन फिलहाल पर्वतीय क्षेत्र में शहद उत्पादन तेजी से घट रहा है, तो वहीं मौनों के अस्तित्व पर भी खतरा मंडरा रहा है. विगत वर्ष सरकार ने राजभवन में शहद बॉक्स रख इससे शहद उत्पादन कर एक संदेश देने का प्रयास भी किया.

शहद उत्पादक काश्तकार कहते हैं कि असल सवाल तो पलायन होते गांवों में लोगों को रोकना है. जब गांव में लोग ही नहीं होंगे तो फिर मौन पालन कौन करेगा? ऐसे में सरकार शहद कारोबार के लिए अलग से नीति भी बना ले तो भी इसका फायदा नहीं दिखेगा. सरकारें शहद उत्पादन से जुड़े लोगों की आजीविका में वृद्धि की बात तो करती रही हैं लेकिन जमीनी हकीकत कुछ और बयां करती है. पूर्ववर्ती हरीश रावत सरकार ने वषार्काल में मधुमक्खियों के तीन महीने का भोजन सरकारी सस्ते गल्ले की

दुकानों से देने का निर्णय लिया था लेकिन वह फलीभूत नहीं हो पा रहा है. उत्तराखंड में शहद उत्पादन के लिए बने कार्यक्रम भले ही परवान नहीं चढ़ पा रहे हों लेकिन वहीं पड़ोसी प्रदेश उत्तर प्रदेश के बागवानी विभाग ने इलाहाबाद, मुरादाबाद, बस्ती और सहारनपुर में प्रशिक्षण केंद्र खोलकर उत्तर प्रदेश को 'हनी हब' बनाने की दिशा में काम शुरू कर दिया है.

जहां तक मधुमक्खियों की उपयोगिता की बात है तो इसे प्रकृति का विशिष्ट प्राणी माना जाता है. इसकी विशेषता यह है कि यह किसी अन्य प्राणी को अपना शिकार नहीं बनाती. पर्यावरण संतुलन में भी इनका बड़ा योगदान रहा है. यह जो शहद बनाती है उसका उपयोग मानव के आहार एवं औषधि के रूप में करता है. यही शहद मनुष्य को एंजाइम्स, विटामिन्स, मिनरल्स, पानी एवं एंटीऑक्सीडेंट देते हैं. जो व्यक्ति की मस्तिष्क की कार्यक्षमता को बढ़ाते हैं. मधुमक्खी में 170 प्रकार की रासायनिक गंध को पहचानने की क्षमता होती है. इसकी खासियत यह है कि यह 6 से 15 मील प्रति घंटे की रफ्तार से उड़ती हैं. जिस तरह से वन घट रहे हैं उसका प्रभाव मधुमक्खियों पर भी पड़ा है. उनकी संख्या में निरंतर गिरावट आ रही है! यदि पहाडों की मिठास कायम रखनी है तो हमें 'रानी साहिबा' के साथ उनके कुनबे को भी संरक्षण व दुलार देना होगा. ❍

(त्रैमासिक) ई-पत्रिका

हिमांतर

हिमालयी सरोकारों के लिए समर्पित

पहला अंक पढ़ने के लिए QR Code Scan करें-

पढ़ने के लिए Visit करें-

www.himantar.com

सक्रिय राजनीतिक प्रतिरोध के चिंतक : रामविलास शर्मा

■ डॉ. स्मिता मिश्र

1) विषय सार-

मैंने इस आलेख में हिन्दी के शीर्षस्थ प्रगतिशील आलोचक डॉ. रामविलास शर्मा के निबंधों के आधार पर शर्मा जी के राजनीतिक चिंतन पर विचार किया गया है देशभक्ति तथा मार्क्सवादी विचारधारा रामविलास जी की आलोचना के केन्द्र बिन्दु रहे। उनकी लेखनी से ऋग्वेद, वाल्मीकि तथा कालिदास से लेकर मुक्ति बोध तक की रचनाओं का मूल्यांकन प्रगतिवादी चेतना के आधार पर हुआ। भारतीय साहित्य के अलावा भारतीय कला-विशेषकर संगीत एवं स्थापत्य तथा संस्कृत, दर्शन, चिन्तन, विज्ञान, भाषा विज्ञान और सामाजिक संरचना को प्रभावित करने वाले इतिहास पुरुषों पर डॉ शर्मा ने विस्तार से लेखन कार्य किया। रामविलास जी ने आधुनिक हिंदी साहित्य की राजनीतिक विरासत में इन लेखकों के साहित्य को जोड़ा है जिनमें सक्रिय प्रतिरोध दृष्टिगत होता है।

2) कुंजी-शब्द

राजनीतिक विरासत, सक्रिय प्रतिरोध, स्वदेशी आंदोलन, यथार्थवाद, निष्क्रिय संघर्ष, बोलशेविज्म

3) विषय- प्रवेश

रामविलास शर्मा ने राजनीति से साहित्य के सरोकारों को इसलिये रेखांकित किया है क्योंकि साहित्य में कलावादियो या रूपवादियो का वर्ग साहित्य को समाज और राजनीति से स्वायत मानता है। यानी कि यह साहित्य में साहित्येतर यथार्थ का दबाव स्वीकार नहीं करता किन्तु यथार्थवादी विचारधारा के लेखक और चिंतक यह मानते हैं कि साहित्य की दुनिया एक सीमा तक स्वायत होते हुए भी बनती है परिवेशगत यथार्थ के विविध आयामों से ही। राजनीति समाज को प्रभावित करने वाली एक बहुत बड़ी शक्ति है। राजनीति के स्वरूप एंव उसके प्रभावों की उपेक्षा करके वह साहित्य नहीं बन सकता जिसमें हम अपने समय और समाज का वास्तविक चेहरा देख सकें। रामविलास जी मानते हैं कि हमारे आधुनिक साहित्य की मुख्यधारा राजनीति के स्वरूप और उससे निर्गत प्रभावों की गहरी पहचान करती रही है और जनजीवन के साथ खड़ी होकर उसके असुंदर और अमानवीय रूप का प्रतिकार करती रही है। साथ ही क्या अपेक्षित है, क्या सुंदर और सर्जनात्मक है इसका भी संकेत करती रही है।

4) विषय-प्रतिपादन

आधुनिक हिन्दी साहित्य के प्रवर्तक भारतेन्दु हरिशचन्द्र से लेकर आजतक की मुख्यधारा में राजनीति के प्रति सजगता व्याप्त

है।भारतेन्दु हरिशचन्द्र आधुनिक काल के प्रवर्तक भी इसी अर्थ में हैं कि उन्होंने अपने देश और समाज में व्याप्त बुराइयों की पहचान की और उनके विरूद्ध स्वर ऊँचा किया। साथ ही क्या होना चाहिये इसका भी निर्देश किया। पराधीन देश के तमाम संकटों के प्रति भारतेन्दु चिंतित हुए और अनेक प्रकार से पराधीनता के विरूद्ध उठ खड़ा होने का आहवान किया। रामविलास शर्मा तो 'आधुनिक हिंदी साहित्य की राजनितिक विरासत' निबंध में हिंदी साहित्य के राजनितिक आधार पर चिंतन करते हुए जिन मुख्य बिन्दुओं को उभारा गया वे निम्नलिखितहैं:-

- भारतेंदु की राजनीतिक चेतना
- भारतेंदुकालीन अन्य लेखकों की राजनीतिक चेतना
- प्रेमचंद की राजनीतिक चेतना

इन बिन्दुओं के अध्ययन से हम रामविलास शर्मा के राजनीतिक चिंतन को और स्पष्ट समझ पाएंगे-

भारतेंदु की राजनैतिक चेतना

रामविलास जी यह मानते थे कि भारतेंदु ने अंगरेजी राज का पदार्फाश किया था । अंग्रेजों ने यह भ्रम पैदा किया कि उन्होंने इस देश को बहुत कुछ दिया और इस भ्रम के साथ वह इस देश पर अपनी जड़ें जमाता गया। किन्तु भारतेन्दु और उनके समय के लेखकों ने असलियत की पहचान और अंग्रेजी राज की तथाकथित नियामतों का पदार्फाश करते हुए देश में व्याप्त अकाल, महामारी, टैक्स और दमन की हकीकत का चित्र पाठकों के सामने रखा। साथ ही जनता को क्या करना चाहिये इसका भी संकेत किया। उन्होंने देश की दशा सुधारने के लिये स्वदेशी वस्तुओं के प्रचार को आवश्यक माना।

रामविलास जी ने यह भी उदघाटन किया कि गांधी जी के स्वदेशी आंदोलन से बहुत पहले भारतेंदु इस आंदोलन का सूत्रपात कर चुके थे। भारतेन्दु ने 23 मार्च 1874 की कवि-वचन-सुधा में अपना यह प्रतिज्ञा-पत्र प्रकाशित करवाया था। जिसका सारांश यह था कि हम लोग आज से विलायती कपड़ा नहीं पहनेंगे। जो कपड़ा मोल ले चुके हैं उसके फटने तक तो उसे पहनते रहेंगे लेकिन विदेशी नया कपड़ा नहीं खरीदेंगे। हिन्दुस्तान का ही बना कपड़ा पहनेंगे। यह भी बहुत महत्वपूर्ण बात है कि भारतेन्दु ने आम संपादकों की तरह पत्रिका में घोषणा-पत्र ही नहीं प्रकाशित किया बल्कि अपने प्रतिज्ञापत्र पर लोगों के हस्ताक्षर करवाये और अपने इन विचारों को अमल में लाने के लिये एक संस्था को भी जन्म दिया। उस संस्था के लोगों को स्वदेशी वस्तुओं का ही व्यवहार करना होता था। यह बात भी ध्यानयोग्य है कि स्वेदशी वस्तुओं के व्यवहार पर जोर देते हुए भी भारतेन्दु ने औद्योगिक शिक्षा का समर्थन किया। वे विदेशों से मशीनें मंगाकर यहां की औद्योगिक उन्नति करने के पक्ष में थे।

रामविलास जी बार-बार यह संकेत कर रहे हैं कि हमारे लेखकों ने सक्रिय प्रतिरोध का समर्थन किया था। भारतेन्दु ने बलिया वाले अपने प्रसिद्ध व्याख्यान में जनता से कहा था कि वह राजा रइसों का भरोसा न करके अपनी शक्ति का भरोसा करें। उन्होंने निष्क्रिय प्रतिरोध के रास्ते को प्रभावहीन समझकर सक्रिय प्रतिरोध का मार्ग दिखाया। उसके लिये उन्होंने एक उदाहरण दिया यदि किसी घर में कोई लंपट पुरूष व्यभिचार करने घुस आए तो घरवाले क्रोध में आकर मारेंगे, पीटेंगे और यथाशक्ति उसका सत्यानाश करेंगे। तो इसी प्रकार अपने देश में आई हुई उन तमाम बुराइयों को उखाड़ फेंको जो तुम्हारी उन्नति के पथ में बाधक है। भारतेन्दु ने यह भी कहा कि सक्रिय प्रतिरोध में कुछ जाने जाती हैं कुछ जान माल का नुकसान होता है लेकिन किसी देश की स्वाधीनता और सुधार के लिये यह बलिदान आवश्यक है। तो रामविलास जी लिखते हैं कि भारतेन्दु ने हमें स्वदेशी व्यवहार,अन्याय का सक्रिय प्रतिरोध और जनता की मुक्ति के लिये स्वंय जनता की शक्ति का भरोसा जो ये तीन मन्त्र दिये थे वे आधुनिक हिन्दी साहित्य की विरासत हैं।

भारतेंदु कालीन अन्य लेखकों की राजनीतिक चेतना

रामविलास शर्मा की दृष्टि भारतेंदु के समकालीन एनी

लेखकों की राजनीतिक सम्बद्धता की भी पहचान करती है। भारतेन्दु के साथ-साथ उस युग के अन्य अनेक लेखकों ने तत्कालीन राजनीति से अपना जुडाव प्रकट किया और उन्होंने अंग्रेजी राज की भारत सम्बंधी नीति की कड़ी आलोचना के साथ-साथ साम्राज्यवादियों की अंतर्राट्रीय युद्ध-नीति को भी जनता के समक्ष स्पष्ट किया और इसका विरोध किया और इस तरह संसार के अनेक साम्राज्य विरोधियों में भाईचारा उत्पन्न किया। शमार्जी तटस्थता के मार्ग का विरोधी थे। उन्होंने गदाधर सिंह की पुस्तक 'चीन में तेरह मास' का भी कई जगह उल्लेख किया। उन्होंने यह स्पष्ट किया कि हमें साम्राज्यवाद से तटस्थ नहीं रहना चाहिये, नान एलाइनमेंट के रास्ते पर चलना सही नहीं है। इनका स्पष्ट मत था कि जब तक संसार में साम्राज्यवाद कायम है तब तक सही नीति यही है कि उसका सक्रिय विरोध किया जाए और उसके तमाम विरोधियों से सक्रिय सहानुभूति कायम की जाए।

वे भारतेंदु कालीन अन्य लेखकों के उस मत को प्रमुखता देते हैं जिसके अनुसार वे कांग्रेस की स्थापना में ब्रिटिश प्रयोजन मानते थे ।कांग्रेस की स्थापना स्वाधीनता प्राप्ति के लिये हुई थी, ऐसा माना जाता है लेकिन इस काल के लेखकों और पत्रकारों ने कांग्रेस की असलियत समझ ली थी। उनका मानना है कि अंग्रेज कूटनीतिज्ञों ने जनता के बढ़ते हुए प्रतिरोध से भयभीत होकर कांग्रेस को जन्म दिया जिससे जनविरोध नरम पड़ जाए और जनता के सक्रिय प्रतिरोध में दरार पड़ जाए। जनवरी-फरवरी 1898 के 'हिन्दी प्रदीप' में बालकृष्ण भट्ट के संपादकीय का शीर्षक था नये स्वर में पुराना गीतः अकाल और महामारी की तेरहवीं कांग्रेस - इस संपादकीय में भट्ट जी ने कहा है कि कांग्रेस अंग्रेजी शिक्षा और अंग्रेजों के साथ संपर्क होने का फल है। यह बीज इंगलैंड से आया और ह्यूम साहब की खेती से उपजा है- वेडरवर्न केन इत्यादि इसे सींचते रहते हैं। इंगलैंड का होकर ही कांग्रेस की खेती की जा सकती है। ब्रिटिश शासक चाहते थे कि उनकी कमियाँ उन्हीं की रोशनी में दिखाई जाए। और जो सुख आनंद ब्रिटिश राज दे रहा है उसकी पुष्टि करके उसे चिरस्थाई कर दिया जाए। भट्ट जी का मानना है कि कांग्रेस की स्थापना इसी प्रयोजन से हुई और वह यही काम कर रही थी। उनका कहना है कि कांग्रेस ने अंग्रेजी राज की त्रुटियाँ को अंग्रेजी रोशनी में देखा और दिखलाया। ब्रिटिश राज ने संगीनों का काफी न समझ कर कांग्रेसी नेतृत्व की सहायता से जनता के क्रान्तिकारी विरोध को कुचला। रामविलास जी का मानना है कि कांग्रेस की तत्कालीन नीतियों और व्यवहारों का प्रभाव आज भी दिखाई पड़ रहा है। अंग्रेजी राज की जडे आज भी यहा जमी हुई हैं जिसके तहत बड़े-बड़े पूंजीपतियों और सामंतों की रक्षा हो रही है और देश की सामान्य पीड़ित जनता को अपने सामान्य हितों की रक्षा के लिये भी नितप्रति लाठी गोली खानी पड़ती है। इससे स्पष्ट है कि भारतेन्दु काल के जागरूक लेखक तत्कालीन साम्राज्यवादियों नीतियों और चालों को गहरे समझते थे और देशभक्ति का पाठ उन्होंने ह्यूम ओर वेडरवर्न से नहीं पढ़ा। उनकी देशभक्ति का स्त्रोत जनता थी। देश की धरती और यहां की संस्कृति में ही उनकी जड़े थी।

इस काल के एक अत्यंत प्रखर लेखक और पत्रकार बालमुकुन्द गुप्त ने 'शिवशंभु का चिट्ठा' और अपनी अन्य अनेक व्यंग्यपूर्ण रचनाओं में अंग्रेजी राज की कड़ी आलोचना की। उन्होंने स्वाधीनता को एक नया अर्थ दिया। यानी कि यहां के गरीब किसान ही सही मायनों में भारतीय जनता है और स्वाधीनता उन्हीं के लिये है। उन्होंने धनिकों की फटकारते हुए सामान्य जनता के दुःखों की ओर सबका ध्यान आकृष्ट किया था और कहना चाहा था कि देश का उपभोग करने वाले धनी मानी लोग देशभक्त कहला रहे हैं। और वास्तव में देश के प्रतीक दारिद्रय में जीवन बिता रहे हैं। इसकी पंक्तियाँ हैं-

हे धनियों! क्या दीन जनों की
नहिं सुनते हो हाहाकार!
जिसका मरे पड़ोसी भूखा
उसके भोजन को धिक्कार!

रामविलास जी का कहना है कि गुप्त जी की कविता 1890

की है। लेकिन आज भी देश के मौजूद नेता अमीरों का हित देखकर ही अपना दृष्टिकोण बनाते हैं। अनाज उपजाने वाले दुखियों के लिये उनके दिल में कोई जगह नहीं है। रामविलास जी का कहना है कि जैसे-जैसे अंग्रेजी राज ने दमन तेज किया और प्रजा का शोषण अधिक से अधिक होने लगा वैसे-वैसे हिन्दी साहित्यकारों का प्रतिरोध स्वर भी तेज हुआ। 1917 की महान रूसी क्रांति ने विश्व साम्राज्य का घेरा तोड़ दिया और एशिया का स्वाधीनता आंदोलन जोर पकड़ने लगा। साम्राज्यवादियों ने बोलशेविज्म का हौवा खड़ा करके अपने दमन को और भी तेज किया और उसे न्यायसंगत ठहराया। हिन्दी लेखकों ने इस हौवे की असलियत को खोलकर रख दिया।

प्रेमचंद की राजनैतिक चेतना

रामविलास जी भारतेन्दु काल के इन जागरूक लेखकों की परंपरा में प्रेमचन्द को अत्यंत महत्वपूर्ण मानते थे । प्रेमचन्द वास्तव में पूरा समय थे। वे अपने समय में व्याप्त चेतना के अनेक आयामों की पहचान करते थे।

उन्होंने उस पहचान को अपने कथा-साहित्य में भली-भांति रूपायित किया। उन्होंने अपने महान उपन्यास प्रेमाश्रम में स्वाधीनता आन्दोलन में किसान-संघर्ष की महत्वपूर्ण भूमिका का चित्रण किया। उन्होंने इस उपन्यास में किसानों के दमन और उस दमन के प्रतिरोध का चित्र खींचा और ये कहना चाहा कि सत्याग्रह में अन्याय का दमन करने की शक्ति नहीं है। अन्याय का दमन संघर्षमय प्रतिरोध से ही हो सकता है। इसी उपन्यास में उपन्यास के पात्र बलराज के माध्यम से रूस की शासन-व्यवस्था का समर्थन किया गया है। कहा गया है कि रूस में काश्तकारों का ही राज है, वे जो चाहते हैं करते हैं। रामविलास जी का मानना है कि प्रेमचन्द आजीवन किसानों के अधिकारों के हिमायती रहे। और इसीलिये उन्होंने आजीवन सोवियत संघ का समर्थन किया। पूँजीपतियों ने लगातार सोवियत विरोधी प्रचार किया। इस प्रचार में कहा गया कि सोवियत संघ की व्यवस्था व्यक्ति स्वाधीनता, धर्म-विश्वास की स्वाधीनता और अंतरात्मा के आदेश पर चलने वाली स्वाधीनता का गला घोंटने वाली व्यवस्था है।प्रेमचन्द ने पूँजीपतियों के इस प्रचार का विरोध किया और कहा कि सोवियत संघ पर जो नये-नये लांछन लगाए जा रहे हैं वे झूठ हैं। पैसे वाले पैसे के बल पर सोवियत संघ के विरूद्ध जो प्रचार कर रहे हैं वह आधारहीन है। सच्चाई तो यह है कि सोवियत संघ साम्राज्यवाद और पूँजीवाद के सारे अंधकार को चीरकर दुनिया में समता का उजास फैला रहा है।

प्रेमचन्द अपने समय को तो पहचानते ही थे,स्वाधीन होने वाले देश के उस भविष्य को भी पहचानते थे जो किसान विरोधी स्वाधीनता आंदोलन की परिणतिस्वरूप प्राप्त होगा। 'गबन' उपन्यास का पात्र देवीदीन खटिक अपने नेताओं के असली चरित्र को पहचानता हुआ उनसे कहता है-

'गरीबों का घर लूटकर विलायत का घर भरना तुम्हारा काम है। इसलिये तुम्हारा इस देश में जन्म हुआ है। साहब! सच बताओं जब तुम स्वराज का नाम लेते हो उसका कौन सा रूप तुम्हारी आँखों के सामने आता है। तुम भी बड़ी-बड़ी तलब लोगे तुम भी अंग्रेजों की तरह बंगलो में रहोगे, पहाड़ो की हवा खाओगे, अंग्रेजी ठाठ बनाए घूमोगे। इस स्वराज से देश का क्या कल्याण होगा। तुम्हारे और भाई-बंधों की जिंदगी भले ही आराम और ठाठ से गुजरे पर देश का तो भला न होगा। अभी जब तुम्हारा राज नहीं है,तब तो तुम भोग विलास पर इतना मरते हो जब तुम्हारा हो जाएगा तब तो तुम गरीबों को पीस कर पी जाओंगे।'

प्रेमचन्द का यह कथन आज कितना सही सिद्ध हो रहा है

रामविलास जी कहते हैं कि सन 30 से 40 तक के वर्ष हिन्दी साहित्य में बहुत ही महत्वपूर्ण हैं। इन वर्षो में हिन्दी साहित्य यथार्थवाद की भूमि पर आगे बढ़ा। यथार्थवादी प्रेमचन्द ने पूँजीवादी के कुरूप चेहरे को तो अनावृत किया ही, सामंतवाद के सौम्य से दिखाई पड़ने वाले चेहरे को भी बेनकाब किया। गोदान में राय साहब बहुत सहज और किसानों के हितैषी दिखाई पड़ते हैं लेकिन भीतर-भीतर वे भी किसानों के शोषक ही

हैं। प्रसाद जी ने भी तितली उपन्यास में भूमि समस्या का सही समाधान बताते हुए कहा है कि जमीन जोतने वालों को मिलेगी तभी समस्या हल होगी। इसी प्रकार निराला ने देवी, चतुरी चमार, कुल्ली भाट आदि रेखाचित्र में गरीबों की दीन दशा का चित्रण तो किया ही है, उनके उद्धार का ढोंग रचने वाले नेताओं को बेनकाब भी किया है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने भी इस विषय पर चिंतन किया है और उन्होंने अपने 'काव्य' नामक निबंध में चंदा वसूलने वाले लेक्चरबाज नेताओं पर व्यंग्य किया है और कहना चाहा है कि ये लोग देश के वास्तविक स्वरूप की पहचान नहीं करते उसके सौंदर्य में मग्न नहीं होते बल्कि घूम-घूम कर चंदा वसूलते हैं और व्याख्यान देते हैं। ऐसे लोग देश प्रेमी नहीं हैं। देशप्रेमी वह है जो देश की पहचान करता हुआ उससे प्रेम करता है। देश की गरीबी, अकाल या उसकी किसी समस्या पर व्याख्यान देने से कोई असर नहीं पड़ता। लेकिन यदि उस गरीबी का करूण दृश्य दिखाया जाए तो बहुत से लोग करूणा से आकुल-व्याकुल हो उठेंगे और उनपर क्रोध भी करेंगे जो गरीबी के लिये जिम्मेदार हैं साथ ही गरीबी को दूर करने के उपाय करेंगे और उपाय न भी करें तो कम से कम उपाय करने का संकल्प तो करेंगे। तो पहला काम यानी व्याख्यान देने का काम राजनीतिज्ञ या अर्थशास्त्री करता है और दृश्य-विधान या चित्र विधान का कार्य कवि करता है।

रामविलास शर्मा निष्क्रिय सन्घर्ष की अपेक्षा सक्रिय सन्घर्ष को महत्व देते थे । उनका विचार था कि हमारे साहित्यकारों ने जनता को स्वाधीनता प्रेम तो सिखाया ही उसे जनवादी चेतना भी दी उन्होंने आने वाले हिन्दी लेखको को जनता के पक्ष में लिखने के लिये प्रेरित किया। उन्होंने यह सिखाया कि भारतीय संस्कृति अन्याय का निष्क्रिय प्रतिरोध नहीं सिखाती है बल्कि सक्रिय संघर्ष का स्तर ऊंचा करती है। महाभारत रामायण के चरित्र नायक सत्याग्रह नहीं करते बल्कि दुष्टों का संहार करते हैं तो हिन्दी लेखकों ने अपनी इसी भारतीय संस्कृति के अनुसार अंग्रेजों का सक्रिय विरोध करने के पक्ष में लिखा। रामविलास जी कहते हैं कि हिन्दी में निष्क्रिय प्रतिरोध से प्रभावित होकर एक भी अच्छी कविता या कहानी नहीं आयी।यहाँ तक कि कांग्रेस की प्रसिद्ध कार्यकर्ता स्वः सुभद्रा कुमारी चौहान ने राष्ट्रीय आंदोलन की सबसे लोकप्रिय कविता लिखी थी,झाँसी की रानी लक्ष्मी बाई पर। इस कविता की लोकप्रियता का कारण था- भारतीय जनता के हृदय में सक्रिय प्रतिरोध कामना। विडंबना यह है कि अंग्रेजी राज से निष्क्रिय प्रतिरोध करने वाली कांग्रेसी सरकार आज उन किसानों या मजदूरों का सक्रिय दमन कर रही है जो अपनी उचित मांगो के लिये शान्तिपूर्ण आंदोलन करते हैं। तो कहा जा सकता है स्वाधीनता प्रेम संसार की साम्राज्य विरोधी जनता से भाईचारा, गरीब जनता की तरफदारी और दुरंगी राजनीति का भंडाफोड़ हिन्दी साहित्य की महत्वपूर्ण विरासत है। सोवियत क्रांति ने विश्व साम्राज्यवाद का घेरा पहली बार तोड़ा। बाद में उसकी साम्राज्यवादी चेतना अन्य अनेक देशों में फैल गई। भारतीय जनता भी उससे प्रभावित हुई। और उसके प्रकाश में जनता के सुखी भविष्य में अटूट विश्वास करते हुए अपनी उपर्युक्त विरासत को याद करते हैं।

भाषा-शैली-

हिन्दी में ऐसे लेखकों की कमी नहीं है जो भाषा-शैली को स्वायत मानकर उसी की छवि गढ़ने में लगे होते हैं ।ऐसे विद्वान व्यक्ति अपनी विद्वत्ता के प्रभाव में अनेक बड़े-बड़े तत्सम शब्दों का प्रयोग करता है और जटिल वाक्य-विधान भी करता है। अपनी शैली की कुछ नई भंगिमा दिखाने के लिये आलंकारिक छटा दिखाता है। यानी कि वह जो बात कहना चाहता है उसे कहने के साथ-साथ भाषा और शैली का निजी सौंदर्य भी बिखेरना चाहता है और कई बार तो ऐसा होता है कि बात गौण पड़ जाती है तथा भाषा और शैली का सौंदर्य मुख्य बन जाता है।

रामविलास जी हिन्दी-अंग्रेजी-संस्कृत और कई भाषाओं के विद्वान हैं। किन्तु मार्क्सवादी रामविलास शर्मा के लिये कथ्य

प्रमुख होता है। और कथ्य भी ऐसा जो हमारे सामाजिक और राष्ट्रीय जीवन में व्याप्त है जो समय और समाज की अनेक समस्याओं और संघर्षो से बना हो। कथ्य को सही अर्थ में पाठकों तक संप्रेषित करना ही भाषा और शैली का लक्ष्य होता है। इसी में उनकी सार्थकता है। इस लेख के साक्ष्य पर उनकी भाषा-शैली विचार करें तो देखेंगे कि रामविलास जी के मन में इस निबंध से संबंधित जो कथ्य है, वह बहुत स्पष्ट है। एक प्रखर दृष्टि के होने के नाते वे अपने कथ्य के स्वरूप को भली भांति पहचान लेते हैं। चाहे समस्या हो या स्थिति हो, चाहे संघर्ष हो, चाहे आंतरिक सौंदर्य हो, रामविलास जी की समाजवादी दृष्टि उसे बहुत साफ तौर पर देख लेती है। कहीं कोई उलझन नहीं होती है। वे जब इस कथ्य को कहना चाहते हैं तब उनकी कोशिश रहती है कि वे एक ऐसी भाषा का प्रयोग करें जो उनके कथ्य को सहज भाव से पाठकों तब ले जाए। इसलिये ये उन तत्सम या तद्भव शब्दों का प्रयोग करते हैं जो प्रायः प्रचलित हैं। प्रायः ये शब्द छोटे-छोटे होते हैं।

जहाँ हिन्दी के अनेक विद्वान पश्चिमी अवधारणाओं को व्यक्त करते समय उनसे सम्बंधित शब्दों के ऐसे-ऐसे अनूदित शब्दों का प्रयोग करते हैं जो निहायत जटिल-अप्रचलित और उबाऊ होते हैं, वहाँ रामविलास जी दर्शन, भाषा-विज्ञान नृशास्त्र आदि पर लिखते हुए भी ऐसे शब्दों का प्रयोग करते हैं जो निहायत अपने लगते हैं। आवश्यकतानुसार हिन्दी, अंग्रेजी के शब्द आते रहते हैं इनका वाक्य-विन्यास सीधा और इकहरा होता है। इसलिये उसमें पारदर्शिता और बहाव होता है। अंग्रेजी वाक्य-विन्यास का कोई असर नहीं है।शैली में कोई आलंकारिक छटा नहीं होती। क्योंकि ये नहीं चाहते कि कथ्य के सौंदर्य के ऊपर और किसी प्रकार के सौंदर्य का आवरण चढ़े। रामविलास जी की निबंध-शैली को वर्णनात्मक शैली कहा सकते है। उनमें न तो काव्यात्मक शैली की आलंकारिता है और न मीमांसा प्रधान शैली की दुरुहता और बोझिलता है। वर्णनात्मक शैली में भी व्यास-प्रधान शैली की प्रमुखता है यानी कि शब्द खुले-खुले आते है और विचार भी साफ-सुथरे ढंग से व्यक्त होते रहते हैं।यानी कि इनके वाक्यों में न तो शब्दों का सामाजिक संगुफन है और न विचारों में सांकेतिकता और रहस्यमयता।

5) निष्कर्ष

डॉ.रामविलास शर्मा घोषित मार्क्सवादी लेखक हैं। अतएव वे उसी साहित्य को महत्वपूर्ण और सार्थक मानते हैं जो अपने समय और समाज के व्यापक और संश्लि ट यथार्थ का चित्रण करता हो और जनसामान्य के पक्ष में खड़ा होकर अनेक प्रकार के अमानवीय और असामाजिक अत्याचारों का विरोध करता हो और शोषित, पीड़ित जन के हित के लिये सपने रचता हो। इन्होंने इस लेख में आधुनिक साहित्य की उस परंपरा के महत्व को रेखांकित किया है जो उपर्यक्त उद्देश्य से प्रेरित है। आधुनिक काल की बहुत बड़ी राष्ट्रीय विडंबना रही है, उसकी पराधीनता। भारतेन्दु से लेकर आज तक ऐसे साहित्य की परंपरा रही है जो सामान्य जन की ओर से पराधीनता एवं स्वाधीन भारत की अनेक विसंगतियों से संघर्ष करता रहा है। रामविलास जी सही अर्थो में इसी साहित्य धारा को हिन्दी की केंद्रीय धारा मानते हैं।

6) संदर्भित पुस्तकें

- *रामविलास शर्मा–चिंतन अनुचिंतन , ऋषिकेश राय .अनन्या प्रकाशन*
- *शिखर आलोचक डॉ रामविलास शर्मा,(स.) प्रकाश मनु , नमन प्रकाशन,दिल्ली*
- *मेरे साक्षात्कार झ्रकिताबघर प्रकाशन,दिल्ली*
- *भारतीय साहित्य की भूमिका, रामविलास शर्मा, राजकमल प्रकाशन ,दिल्ली*

(लेखिका एसोसिएट प्रोफेसर, श्री गुरु तेग बहादुर खालसा कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली हैं)

हिमांतर ई-पत्रिका के प्रकाशन पर हार्दिक बधाई एवं अनंत शुभकामनाएं

डॉ. कुसुम जोशी का लघु कथा संग्रह
'उसके हिस्से का चांद' अब अमेजन पर भी उपलब्ध

डॉ. कुसुम जोशी
कवि एवं लेखिका
वसुंधरा, गाजियाबाद

रुद्रा एग्रो स्वायत्त सहकारिता

ग्राम-देवलसारी, नौगांव,
उत्तरकाशी (उत्तराखंड)

सभी प्रकार के पहाड़ी उत्पाद सीजन के अनुसार उपलब्ध रहते हैं

श्रीमती लता नौटियाल
सीईओ
रुद्रा एग्रो स्वायत्त सहकारिता

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें
8958083073
9456126214

www.kaatokitaabat.com

खतोकिताबत
साहित्य को समर्पित एक प्रयास

खतों के जरिए करिए भावनाओं का इजहार

digitalkaatokitabat@gmail.com

फेसबुक : facebook.com/Khatokitabat यूट्यूब : khatokitabat Digital

YVPS

Yamuna Valley Public School

NAUGAON, UTTARKASHI (UTTARAKHAND)

Admissions OPEN

2021-22

Class Nursery to VIII

- शिक्षा
- संस्कार
- नैतिक मूल्य
- व्यक्तित्व विकास

E-mail : yamunavalleyps@gmail.com

www.yvpsnaugaon.com

#78387 65991 #90120 82236